हम पवित्र आत्मा पर विश्वास करते हैं

अध्याय 3

कलीसिया में

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय....1
वाचाई अनुग्रह....2
पुराना नियम....3
नया नियम....6
पवित्रशास्त्र....7
प्रेरणा....8
संदेश....10
उद्देश्य....12
वाचाई समुदाय....12
ईश्वरीय उपकार....13
मानवीय विश्वासयोग्यता....15
परिणाम....17
आत्मिक वरदान....17
उद्देश्य....18
पवित्रशास्त्र में इतिहास....20
वर्तमान प्रयोग....23
उपसंहार....25

हम पवित्र आत्मा पर विश्वास करते हैं

अध्याय तीन

कलीसिया में

परिचय

क्रूसीकरण से पहले यीशु मसीह ने अपने चेलों के साथ जो अंतिम रात बिताई उसमें उसने कई बातों के विषय में उनसे बात की। उस रात उसका एक मुख्य लक्ष्य उन्हें भविष्य के लिए तैयार करना था — केवल अपनी गिरफ़्तारी और मृत्यु के लिए ही नहीं बल्कि उस समय के लिए भी जब उसका स्वर्गारोहण हो जाएगा। और उसने उन्हें एक सबसे अद्भुत बात यह बताई कि जब वह चला जाएगा तो वे एक बेहतर स्थिति में होंगे। क्या आप यीशु के साथ आमने-सामने बात करने, और उससे यह बात सुनने की कल्पना कर सकते हैं? यह बहुत ही हास्यास्पद लगता है, है न? हाँ, पर केवल तब तक जब तक आपको उसका कारण पता नहीं चलता। आप देखें, कि जब यीशु चला जाएगा तो परमेश्वर का पवित्र आत्मा उनके पास आएगा। आत्मा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने में उनकी भूमिकाओं को पूरा करने में उन्हें सक्षम बनाएगा। और वह पूरे संसार में परमेश्वर के राज्य का निर्माण करने के लिए कलीसिया को सामर्थी बनाएगा।

यह *हम पवित्र आत्मा पर विश्वास करते हैं* की हमारी श्रृंखला का तीसरा अध्याय है। हमने इस अध्याय का नाम "कलीसिया में" दिया है, क्योंकि हम परमेश्वर के वाचाई लोगों के समुदाय के बीच पवित्र आत्मा के कार्य पर ध्यान देंगे।

पिछले अध्याय में हमने पूरे संसार में पवित्र आत्मा के विधानीय कार्य की जाँच की थी। अब्राहम के समय से पहले परमेश्वर ने सब मनुष्यों से इसी प्रकार बात की थी। परंतु इस अध्याय में हम उस विधानीय कार्य को देखेंगे जो वह मनुष्यजाति के केवल एक समूह के भीतर करता है। अब्राहम से आरंभ करके परमेश्वर ने लोगों के एक विशिष्ट समूह के साथ एक विशेष संबंध की शुरुआत की। और उसने इस संबंध को संचालित करने के लिए उनसे एक वाचा बाँधी। अब्राहम से शुरू करके परमेश्वर के पास हमेशा एक विशेष वाचाई प्रजा रही है। और हम इस वाचाई प्रजा को "कलीसिया" कहते हैं।

अधिकांश लोग नए नियम की कलीसिया से परिचित हैं। परंतु यद्यपि कई आधुनिक अनुवाद यह नहीं दर्शाते, फिर भी पवित्रशास्त्र प्राचीन इस्राएल — अब्राहम की संतान — का उल्लेख भी "कलीसिया" के रूप में करता है। पुराने नियम का यूनानी अनुवाद, अर्थात् सेप्टुआजिंट यूनानी शब्द *एक्लेशिया* (*ἐκκλησία*) का प्रयोग इस्राएल की "सभा" या "मंडली" को दर्शाने के लिए करता है। यही वह शब्द है जिसका नए नियम में आम तौर पर "कलीसिया" के रूप में अनुवाद किया जाता है। सेप्टुआजिंट व्यवस्थाविवरण 9:10, और 31:30; न्यायियों 20:2; 1 राजाओं 8:14; और भजन 22:22, 25 जैसे स्थानों में इस शब्द का प्रयोग इस्राएल के नाम के रूप में करता है। यहाँ तक कि नया नियम प्रेरितों के काम 7:38 में राष्ट्र इस्राएल का उल्लेख *एक्लेशिया* के रूप में करता है। और सुनिए कैसे पतरस ने 1 पतरस 2:9 में कलीसिया का वर्णन किया :

> पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो (1 पतरस 2:9)।

नए नियम की कलीसिया से बात करते हुए पतरस ने इसे इस्राएल राष्ट्र के लिए प्रयुक्त पुराने नियम के कई नामों से संबोधित किया।

जैसा कि हम निर्गमन 19:6 में पढ़ते हैं, परमेश्वर ने इस्राएल को "याजकों का राज्य और पवित्र जाति" कहा। व्यवस्थाविवरण 7:6 में इस्राएल का उल्लेख "यहोवा की पवित्र प्रजा... [उसके] निज धन" के रूप में किया। और यशायाह 62:12 में हम यह पढ़ते हैं, "और लोग [इस्राएल को] पवित्र प्रजा और

यहोवा के छुड़ाए हुए कहेंगे।” जब पतरस ने नए नियम की कलीसिया का उल्लेख इस्राएल के पुराने नियम के नामों से किया तो उसने दर्शाया कि ये दो समूह एक, अनवरत वाचाई लोगों की रचना करते हैं।

> कुछ विश्वासियों का मानना है कि कलीसिया की स्थापना पवित्र आत्मा के उंडेले जाने के द्वारा नए नियम में की गई थी... परंतु सच्चाई यह है कि कलीसिया पुराने नियम की कलीसिया का एक विस्तृत रूप है। परमेश्वर ने पुराने नियम में अब्राहम को और उसके लोगों को बुलाया, और वे ही पुराने नियम में परमेश्वर के लोग थे, और पुराने नियम की कलीसिया थे। और यही कलीसिया आज हमारे समय में है, और यही यीशु मसीह के द्वितीय आगमन तक जारी रहेगी।
>
> — डॉ. रिआद कासिस

निस्संदेह, पुराने और नए नियमों के परमेश्वर के वाचाई समुदायों के बीच भिन्नताएँ हैं। परंतु उनकी निरंतरता पवित्र आत्मा के कार्य को समझने में हमारी सहायता करती है। पुराने और नए दोनों नियमों में और तब से लेकर पूरे इतिहास में परमेश्वर के वाचाई लोगों के बीच आत्मा के कार्य ने शेष सृष्टि में उसके कार्य को बहुत पीछे छोड़ दिया है। अतः इस अध्याय में जब हम “कलीसिया” शब्द का प्रयोग करते हैं, तो हमारे मन में पुराने नियम और नए नियम दोनों के समुदाय हैं।

हम कलीसिया में पवित्र आत्मा के नियति विधान के कार्य का अध्ययन तीन भागों में करेंगे। पहला, हम उसके वाचाई अनुग्रह को देखेंगे। दूसरा, हम उसके द्वारा पवित्रशास्त्र के दिए जाने पर चर्चा करेंगे। और तीसरा, हम आत्मिक वरदानों को संबोधित करेंगे। आइए पहले हम पवित्र आत्मा के वाचाई अनुग्रह को देखें।

वाचाई अनुग्रह

पुराने नियम और नए नियम दोनों में पवित्रशास्त्र परमेश्वर की कलीसिया के साथ परमेश्वर के संबंध का वर्णन एक वाचा के रूप में करता है। शब्द “वाचा” का अनुवाद इब्रानी शब्द *बेरित* (בְּרִית) से और यूनानी शब्द *डियाथेके* (*διαθήκη*) से किया गया है। ये वही शब्द हैं जिनका प्रयोग प्राचीन जगत ने अंतर्राष्ट्रीय संधियों का वर्णन करने के लिए किया था। विशेष रूप से, अपने लोगों के साथ परमेश्वर का वाचाई संबंध बड़े सम्राटों या सुजरेन और उनकी सेवा करनेवाले वासल राज्यों के बीच की प्राचीन संधियों को दर्शाता है।

प्राचीन सुजरेन-वासल संधियों में तीन बातें समान थीं : उन्होंने अपने वासल के प्रति सुजरेन की परोपकारिता को अभिव्यक्त किया। उन्होंने उस विश्वासयोग्यता को परिभाषित किया जिसकी अपेक्षा सुजरेन अपने वासल से करता था। और उन्होंने उन परिणामों को स्पष्ट किया जो वासल की विश्वासयोग्यता या उसके विश्वासघात से निकलकर आएँगे। और ये संधियाँ, या वाचाएँ कई पीढ़ियों तक जारी रहीं, जिससे वासल राज्यों के उत्तराधिकारियों ने सुजरेन राज्यों के उत्तराधिकारियों की सेवा करना जारी रखा। इसी तरह से, परमेश्वर की वाचाएँ अपने लोगों के प्रति उसके उपकार का वर्णन करती हैं, उस विश्वासयोग्यता को स्पष्ट करती हैं जो उन्हें उसके प्रति रखनी है, और आज्ञाकारिता या अनाज्ञाकारिता के परिणामों को प्रकट करती हैं।

अपने पिछले अध्याय में हमने उल्लेख किया था कि संसार में पवित्र आत्मा के कार्य में सामान्य अनुग्रह शामिल होता है। सामान्य अनुग्रह संपूर्ण मनुष्यजाति में भलाई और जीवन को बढ़ाने का आत्मा

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

का कार्य है — सामान्य परोपकार जैसा। परंतु कलीसिया के साथ परमेश्वर की वाचा में और अधिक परोपकारिता, भलाई और जीवन को इस रीति से बढ़ाना शामिल था जो सामान्य अनुग्रह से आगे बढ़ता है। और इसमें शेष मनुष्यजाति के द्वारा प्राप्त किए जाने से और अधिक धीरज, सहनशीलता और दया शामिल होती है। यह कलीसिया के सब लोगों पर लागू होता है, फिर चाहे उनके पास उद्धार देनेवाला विश्वास हो या न हो।

> आज हमारे समय में एक आम धारणा या मान्यता यह है कि परमेश्वर सबके साथ एक समान व्यवहार करता है। परंतु मेरे विचार में नए नियम में हम यह देखते हैं कि परमेश्वर वास्तव में संसार के शेष लोगों की अपेक्षा अपने वाचाई लोगों के साथ एक बड़ी आशीष और अधिक अनुग्रह के साथ व्यवहार करता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि वह सब लोगों की परवाह नहीं करता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि उसका अनुग्रह किसी न किसी रूप में सब लोगों के लिए उपलब्ध नहीं है। परंतु बात जब उसके बच्चों की आती है तो मुझे लगता है कि वह अधिक कृपालु बन जाता है। और हमें इससे चकित नहीं होना चाहिए। एक सांसारिक पिता आस-पड़ोस के अन्य बच्चों से प्यार कर सकता है, परंतु वह अन्यों की अपेक्षा अपने बच्चों से अधिक प्रेम और स्नेह रखता है। और इसलिए मेरे विचार में यही बात हम नए नियम में देखते हैं कि परमेश्वर अपने बच्चों पर और अधिक आशीष, और अधिक प्रेम, प्रोत्साहन और सहायता उंडेलता है। और यह स्वाभाविक ही है। हमें यह समझना चाहिए कि हम उस परमेश्वर में वही देखना चाहते हैं जो स्वयं को "पिता" कहता है।
>
> — डॉ. डान लैसिक

हम वाचाई अनुग्रह के आत्मा के कार्य की चर्चा सबसे पहले पुराने नियम की कलीसिया पर ध्यान देने के द्वारा, और फिर नए नियम की कलीसिया पर ध्यान देने के द्वारा करेंगे। आइए हम वाचाई अनुग्रह की पुराने नियम की अभिव्यक्तियों के साथ आरंभ करें।

पुराना नियम

अब्राहम, मूसा और दाऊद के दिनों में परमेश्वर ने ऐसी वाचाएँ बाँधीं जिन्होंने इस्राएल के संपूर्ण राष्ट्र तक विशेष अनुग्रह को पहुँचाया। उसने सबसे पहले इस्राएल की रचना एक विशेष राष्ट्र के रूप में की जब उसने उत्पत्ति 15, 17 में अब्राहम को वाचाई संबंध स्थापित करने के लिए बुलाया। इस वाचा ने बड़े अनुग्रह के साथ प्रतिज्ञा की कि अब्राहम की संतान प्रतिज्ञा के देश को प्राप्त करेगी, और कि वे पृथ्वी के सब देशों पर राज्य करेंगे। जैसा कि पौलुस ने रोमियों 4:13 में लिखा :

> यह प्रतिज्ञा कि वह जगत का वारिस होगा... अब्राहम को [और] उसके वंश को... दी गई थी (रोमियों 4:13)।

यही नहीं, अब्राहम ने यह प्रतिज्ञा परमेश्वर के अनुग्रह के आधार पर पाई, जिसे उसने विश्वास के द्वारा प्राप्त किया। जैसा कि हम हम रोमियों 4:16 में पढ़ते हैं :

> प्रतिज्ञा विश्वास पर आधारित है कि अनुग्रह की रीति पर हो, कि वह उसके सब वंशजों के लिये दृढ़ हो (रोमियों 4:16)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

और इस्राएल के पूरे इतिहास में परमेश्वर ने उनके साथ अनुग्रह के साथ व्यवहार करना जारी रखा। पुराने नियम से परिचित प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि इस्राएल राष्ट्र अक्सर परमेश्वर के प्रति अविश्वासयोग्य रहा। वे उसके विरुद्ध बुड़बुड़ाए। उन्होंने उनके लिए बनाई परमेश्वर की योजनाओं का विरोध किया। उन्होंने अन्य देवताओं की उपासना की। उन्होंने अपने पड़ोसियों से दुर्व्यवहार किया। वास्तव में, उन्होंने तब भी ये सब कार्य किए जब परमेश्वर उन्हें मिस्र की गुलामी से छुड़ा रहा था। सुनिए किस प्रकार यशायाह ने यशायाह 63:11-14 में परमेश्वर के वाचाई अनुग्रह को समझा :

> मूसा के [दिनों में]... [वह उन्हें]... समुद्र में से निकाल लाया... [उसने] उनके बीच अपना पवित्र आत्मा डाला... अपने प्रतापी भुजबल को मूसा के दाहिने हाथ के साथ कर दिया... उनके सामने जल को दो भाग कर दिया... [और] उनको गहिरे समुद्र में से ले चला... यहोवा के आत्मा ने उनको विश्राम दिया (यशायाह 63:11-14)।

परमेश्वर ने जब उन्हें मिस्र से बचाया तो उसने उन पर वाचाई अनुग्रह किया। उसने उनके लिए लाल समुद्र को दो भाग किया, फ़िरौन की सेना को नष्ट किया, और प्रतिज्ञा के देश में इस्राएल को विश्राम दिया। इन आशीषों के बावजूद भी इस्राएल ने उसके विरुद्ध पाप करना जारी रखा। परंतु जब उन्होंने पाप करना जारी रखा तब भी परमेश्वर का आत्मा उन पर वाचाई दया और अनुग्रह करता रहा।

> पुराने नियम में परमेश्वर सब लोगों के प्रति धीरजवंत और अनुग्रहकारी है... परंतु वह इस्राएल के प्रति विशेषकर धीरजवंत है क्योंकि इस्राएल के साथ उसने वाचा बाँधी थी। उसने कहा, "हे इस्राएल, मैंने तुम्हारे लिए यह इसलिए नहीं किया है कि तुम बहुत धर्मी थे, या तुम सब लोगों में सबसे महान थे, बल्कि इसलिए कि तुम तो सब देशों के लोगों से गिनती में थोड़े थे।" वह कहता है, "मैंने तुम्हारे लिए यह इसलिए किया क्योंकि मैंने तुमसे प्रेम किया और क्योंकि मैंने तुम्हारे पूर्वजों से प्रतिज्ञा की थी।" और इस्राएल को ऐसा माध्यम बनना था जिसके द्वारा परमेश्वर अन्य राष्ट्रों के समक्ष स्वयं को प्रकट करे। परमेश्वर ने अब्राहम से कहा कि उसने अब्राहम को चुना है ताकि वह उसके वंशजों का पालन-पोषण सही तरीके से करे जिससे वे परमेश्वर की वाचा का अनुसरण करें। अतः हमेशा से परमेश्वर धीरजवंत रहा है, परंतु परमेश्वर इस्राएल के साथ बाँधी अपनी वाचा के कारण और अब्राहम के वंश के द्वारा सब जातियों को आशीष देने के अपने उद्देश्य के कारण इस्राएल के प्रति विशेष रूप से धीरजवंत रहा है।
>
> — डॉ. क्रेग एस. कीनर

नहेम्याह 9 अब्राहम से लेकर पाँचवी सदी ईसा पूर्व की राज्य की पुनर्स्थापना के प्रयास तक इस्राएल के राष्ट्रीय इतिहास को सारगर्भित करता है। और इस पूरे सारांश में यह कहता है कि परमेश्वर ने उनके घोर विद्रोह के बावजूद भी इस्राएल से प्रेम और दया के साथ व्यवहार किया। इस अध्याय में आत्मा के वाचाई अनुग्रह के केवल कुछ उदाहरणों को सुनिए। नहेम्याह 9:17-20 में हम यह पढ़ते हैं :

> तू क्षमा करनेवाला अनुग्रहकारी और दयालु, विलम्ब से कोप करनेवाला, और अतिकरुणामय ईश्वर है, तू ने उनको न त्यागा। वरन् जब उन्होंने बछड़ा ढालकर कहा, "तुम्हारा परमेश्वर जो तुम्हें मिस्र देश से छुड़ा लाया है, वह यही है," और तेरा बहुत तिरस्कार किया, तब भी तू ने, जो अति दयालु है, उनको जंगल में न

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

> त्यागा... तू ने उन्हें समझाने के लिये अपने आत्मा को जो भला है दिया (नहेम्याह 9:17-20)।

यहाँ नहेम्याह ने मूसा के दिनों में किए इस्राएल के पाप का उल्लेख किया। यह सच्चाई कि इस्राएल ने मूर्तिपूजा और निंदा के इन कार्यों को किया, प्रमाणित करती है कि बहुत से इस्राएली सच्चे विश्वासी नहीं थे। फिर भी, वे अब भी परमेश्वर के साथ वाचा में थे, और उसने फिर भी उनसे वाचाई अनुग्रह के साथ व्यवहार किया था। जैसे नहेम्याह ने बल दिया, परमेश्वर ने अपना आत्मा इस्राएल को नाश करने के लिए बल्कि उन्हें सिखाने के लिए भेजा।

दाऊद के दिनों में परमेश्वर ने बड़े अनुग्रह के साथ इस्राएल में एक स्थाई राजवंश को स्थापित किया। परंतु लोग इतने अविश्वासयोग्य थे कि 930 ईसा पूर्व में परमेश्वर ने राज्य को इस्राएल के उत्तरी राज्य और यहूदा के दक्षिणी राज्य में विभाजित कर दिया। अगले सैंकड़ों वर्षों के लिए परमेश्वर ने लोगों को मन फिराने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु भविष्यवक्ताओं को भेजने के द्वारा वाचाई अनुग्रह को प्रदान करना जारी रखा। परंतु उन्होंने मन नहीं फिराया। इसलिए उसने 722 ईसा पूर्व में इस्राएल को और 586 ईसा पूर्व में यहूदा को निर्वासन में भेजा। परंतु तब भी उसने अपने वाचाई अनुग्रह को बनाए रखा। जैसा कि हम नहेम्याह 9:30-31 में पढ़ते हैं।

> तू... अपने आत्मा से नबियों के द्वारा उन्हें चिताता रहा परन्तु वे कान नहीं लगाते थे, इसलिये तू ने उन्हें देश देश के लोगों के हाथ में कर दिया। तौभी तू ने जो अतिदयालु है, उनका अन्त नहीं कर डाला और न उनको त्याग दिया, क्योंकि तू अनुग्रहकारी और दयालु ईश्वर है (नहेम्याह 9:30-31)।

नहेम्याह के समय में राज्य की पुनर्स्थापना का प्रयास परमेश्वर के वाचाई अनुग्रह का एक और उदाहरण था। अंततः यह असफल रहा क्योंकि लोग निरंतर अविश्वासयोग्य बने रहे। परंतु परमेश्वर का वाचाई अनुग्रह स्थिर बना रहा जिसके कारण उसने अगली पाँच सदियों तक उस राष्ट्र को सुरक्षित रखा और बनाए रखा, तथा अपने मसीहा या ख्रिस्त के द्वारा उन्हें विश्वास में पुनर्स्थापित करने की उनसे प्रतिज्ञा की। सुनिए किस प्रकार जकर्याह 12:10 इस आने वाले उद्धार का वर्णन करता है :

> मैं दाऊद के घराने और यरूशलेम के निवासियों पर अपना अनुग्रह करनेवाली और प्रार्थना सिखानेवाली आत्मा उण्डेलूँगा (जकर्याह 12:10)।

कुछ अनुवाद यहाँ परमेश्वर के आत्मा की अपेक्षा मनुष्य की आत्मा को दर्शाते हैं। परंतु जब इब्रानी में क्रिया "उंडेलना" या *शाफाख* (*שָׁפַךְ*) का प्रयोग "आत्मा" शब्द के साथ किया जाता है, तो यह सामान्यतः *परमेश्वर* के आत्मा को दर्शाता है। हम ऐसे ही विचारों को यशायाह 32:15, और 44:3; यहेजकेल 39:29; और योएल 2:28, 29 में देखते हैं।

प्राचीन इस्राएल के इतिहास का चरित्र पराजय और आशा का रहा है। परमेश्वर की वाचाई प्रतिज्ञाओं ने इस्राएल की परम सफलताओं की निश्चितता प्रदान की। परंतु परमेश्वर के विरुद्ध इस्राएल के नियमित विद्रोह का अर्थ था कि पीढ़ी दर पीढ़ी उन्हें अनाज्ञाकारिता के परिणामों को सहना पड़ा। इस्राएल का राज्य दो भागों में बंट गया था, और प्रत्येक भाग को उसके अपने ही पाप कारण निर्वासन में घसीटा गया था। जब उनका निर्वासन समाप्त हुआ, तो पुनर्स्थापना के उनके प्रयास विफल हो गए क्योंकि वे उसके प्रति विश्वासयोग्य नहीं रहे जिसने उन्हें बचाया था। फिर भी परमेश्वर का वाचाई अनुग्रह दृढ़ बना रहा। और उस अनुग्रह में उसने अंततः अपने वाचाई राष्ट्र को बचाने के लिए यीशु को भेजा। उस राष्ट्र के कुछ लोगों ने उसे मसीहा के रूप में स्वीकार किया और वे लोग कलीसिया के आरंभिक घटक बन गए।

इस बात को ध्यान में रखते हुए कि कैसे आत्मा ने विधानीय रूप से पुराने नियम की कलीसिया के साथ व्यवहार किया, आइए अब हम अपना ध्यान उसके नए नियम के वाचाई अनुग्रह की ओर लगाएँ।

नया नियम

पुराने नियम की कलीसिया के समान ही नए नियम की कलीसिया में भी विश्वासी और अविश्वासी दोनों पाए जाते हैं। और पुराने नियम के समान ही *संपूर्ण* कलीसियाई समुदाय परमेश्वर के साथ वाचा में बंधा है। इसी कारण नया नियम अक्सर कलीसिया में अविश्वासियों के विषय को संबोधित करता है। उदाहरण के लिए, मत्ती 13:24-30 में यीशु के जंगली बीज के दृष्टांत में यह माना जाता है कि कलीसिया में अविश्वासी होंगे, और यह चेतावनी देता है कि विश्वास की घोषणा करनेवाले भी शायद उद्धार न पाएँ। गलातियों 5:4 में पौलुस ने कहा कि जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरने का प्रयास कर रहे थे वे अनुग्रह से वंचित हो गए थे। पहला तीमुथियुस 1:19, 20 कुछ ऐसे लोगों के बारे में बात करता है जिनका "विश्वासरूपी जहाज डूब गया" था और जिन्हें "शैतान को सौंप दिया" गया था। इब्रानियों 6:4-6 भी चेतावनी देता है कि जो पवित्र आत्मा के भागी हुए हैं वे भटककर खो सकते हैं। ये सारे विचार पुराने और नए नियमों के बीच निरंतरता के बिंदु हैं। सुनिए किस प्रकार इब्रानियों 10:26-29 कलीसिया में अविश्वासियों के बारे में बात करता है :

> सच्चाई की पहिचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान बूझकर पाप करते रहें, तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान बाकी नहीं... जब मूसा की व्यवस्था का न माननेवाला... बिना दया के मार डाला जाता है तो सोच लो कि वह कितने और भी भारी दण्ड के योग्य ठहरेगा, जिसने परमेश्वर के पुत्र को पाँवों से रौंदा और वाचा के लहू को जिसके द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था, अपवित्र जाना है, और अनुग्रह के आत्मा का अपमान किया (इब्रानियों 10:26-29)।

कलीसिया में निश्चित रूप से अविश्वासी हैं, और वे अंततः परमेश्वर से दंड पाएँगे। परंतु उससे पहले वे वाचाई अनुग्रह को प्राप्त करते हैं। उनके पास "सच्चाई की पहचान" है। वे "वाचा के लहू" के द्वारा पवित्र किए गए हैं। और "अनुग्रह का आत्मा" उनकी सेवा करता है।

आशापूर्ण रूप से, हमारी कलीसियाओं के अधिकांश लोग विश्वासी हैं। परंतु चाहे हम में विश्वास हो या न हो, हमारे परमेश्वर के साथ वाचा में होने की सच्चाई का अर्थ यह है कि पवित्र आत्मा हमें वाचाई अनुग्रह प्रदान करता है। यह उद्धार देनेवाला अनुग्रह नहीं है — वह अनुग्रह विश्वासियों के लिए आरक्षित है। परंतु फिर भी वह अनुग्रह है। यह फिर भी परमेश्वर की ओर ऐसा अनुग्रह है जिसके हम योग्य नहीं है और जो हमारे जीवनों को सुधारता है और हमें उद्धार पाने का अवसर प्रदान करता है।

> परमेश्वर के साथ वाचा में होने का लाभ अविश्वासी लोग भी पाते हैं... कहने का अर्थ है कि वे तकनीकी रूप से दृश्य कलीसिया के सदस्य हैं। और दृश्य कलीसिया वह स्थान है जहाँ परमेश्वर वचन के प्रचार, बपतिस्मा तथा प्रभु-भोज के संस्कारों की उपस्थिति के द्वारा अपने चरित्र को बहुत स्पष्ट रूप से प्रकट करता है। ये लोग केवल इन बातों में शामिल होने के द्वारा, और उन्हें सिखाए जानेवाले वचन को सुनने के द्वारा लाभ प्राप्त करते हैं। उनके पास कलीसिया के अगुवों के द्वारा प्रदान किया गया उत्तरदायित्व है... केवल इतना ही नहीं, मैं उसमें यह भी जोड़ूँगा कि दृश्य कलीसिया में परमेश्वर अपने लोगों की रक्षा करता है, फिर चाहे यह रहस्यमय तरीकों में ही क्यों न हो। वह उनकी उन बातों से रक्षा करता है जिनका वे सामना कर सकते हैं... अतः वे वास्तव में उसके प्रति पहले की अपेक्षा

> और अधिक उत्तरदायी हैं। एक दिन उन्हें और अधिक बातों का उत्तर देना होगा, परंतु उसी दौरान उनके पास ये सब अद्‌भुत विशेषाधिकार होते हैं, और मेरे विचार में परमेश्वर उनके पीछे-पीछे होता है, सब तरीकों में उन तक पहुँचने का प्रयास करता है, उन्हें शिक्षा प्रदान करता है, उन्हें सुसमाचार प्रदान करता है, उस पर विश्वास करने और उसका अनुसरण करने के अवसर देता है, मैं निश्चित रूप से कहूँगा कि यद्यपि उन्होंने उद्धार नहीं पाया है, फिर भी उनका परमेश्वर के साथ वाचा में होना एक अद्‌भुत आशीष है।
>
> — रेव्ह. माइक ओसबोर्न

इस पर इस रीति से ध्यान दें : प्रत्येक व्यक्ति जो कलीसिया का भाग है उसे नियमित रूप से सुसमाचार सुनाया जाता है और मन फिराकर उद्धार पाने का अवसर प्रदान किया जाता है। और हम सब उस अनुग्रह के सहभागी हैं जो परमेश्वर संपूर्ण कलीसिया को देता है, जैसे कि हमारे शत्रुओं से सुरक्षा, हमारी सांसारिक जरूरतों की पूर्ति, और सहनशीलता जब बात हमारे पापों के कारण सांसारिक दंड की आती है। प्रेरितों के काम 9:31 में आरंभिक कलीसिया के उदाहरण पर ध्यान दें, जो कहता है :

> सारे यहूदिया, और गलील, और सामरिया में कलीसिया को चैन मिला, और उसकी उन्नति होती गई; और वह प्रभु के भय और पवित्र आत्मा की शान्ति में चलती और बढ़ती गई (प्रेरितों के काम 9:31)।

आत्मा बड़े अनुग्रह से हमारे पापों को रोकता है, हमें चैन, सामर्थ्य और प्रोत्साहन प्रदान करता है।

इससे बढ़कर, पवित्र आत्मा कलीसिया की संगति या सहभागिता के द्वारा कलीसिया के सब लोगों की सेवा करता है। वह इसके सब सदस्यों को एक दूसरे से प्रेम करने, उनका सहयोग करने और उनकी सहायता करने के लिए सशक्त और प्रेरित करता है। उदाहरण के लिए, वाचाई अनुग्रह में कलीसिया द्वारा भौतिक वस्तुओं और धन को एक दूसरे के साथ बाँटना शामिल होता है, जैसा कि हम प्रेरितों के काम 2:44, और 2 कुरिन्थियों 9:13, 14 में देखते हैं। और इसमें वह एकता और शांति शामिल होती है जो हम एक दूसरे के साथ साझा करते हैं, जैसे कि पौलुस ने इफिसियों 4:3 में लिखा। और जैसा कि हम इस अध्याय के शेष भाग में देखेंगे, इसमें आत्मा की अन्य बहुत सी अनुग्रहकारी सेवकाइयाँ भी शामिल होती हैं।

कलीसिया में पवित्र आत्मा के वाचाई अनुग्रह के विधानीय कार्यों पर चर्चा कर लेने के बाद, आइए हम उसके द्वारा पवित्रशास्त्र को प्रदान किए जाने के पहलू की ओर मुड़ें।

पवित्रशास्त्र

बहुत से लोगों के पास आज पवित्रशास्त्र है। परंतु इस बात पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि पवित्रशास्त्र संपूर्ण मनुष्यजाति के समक्ष प्रकट नहीं किया गया था। इसे विशेष रूप से परमेश्वर के वाचाई समुदाय, अर्थात् मसीह की कलीसिया को प्रदान किया गया था। पवित्र आत्मा ने पवित्रशास्त्र के ईश्वरीय प्रेरणा-प्राप्त मानवीय लेखकों के रूप में अपने वाचाई समुदाय से लोगों को चुना। और पुराने तथा नए दोनों नियमों में उन्होंने कलीसिया को अपने लेखन प्रदान किए।

इस अध्याय में हम पवित्रशास्त्र के केवल ऐसे तीन पहलुओं पर ध्यान देंगे जो कलीसिया में पवित्र आत्मा के कार्य को देखने में हमारी सहायता करते हैं। पहला, हम पवित्रशास्त्र की आत्मा की प्रेरणा के बारे में बात करेंगे। दूसरा, हम पवित्रशास्त्र में आत्मा के एकीकृत संदेश को देखेंगे। और तीसरा, हम पवित्रशास्त्र में कलीसिया के लिए उसके वाचाई उद्देश्य को संबोधित करेंगे। आइए हम आत्मा की प्रेरणा के साथ शुरू करें।

प्रेरणा

शब्द "प्रेरणा देना" का अर्थ "श्वास भरना" है। अतः जब हम कहते हैं कि पवित्र आत्मा ने मानवीय लेखकों को प्रेरित किया, तो हमारा अर्थ है कि उसने अपने शब्दों को उनमें श्वास की भांति भरा। इसी कारण 2 तीमुथियुस 3:16 कहता है :

> सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है (2 तीमुथियुस 3:16)।

विद्वानों के इस विषय पर अलग-अलग मत हैं कि पवित्र आत्मा ने पवित्रशास्त्र को कैसे प्रेरित किया, और पवित्र आत्मा तथा मानवीय लेखकों ने क्या भूमिकाएँ अदा कीं। परंतु सामान्य रूप में ये दृष्टिकोण तीन श्रेणियों में विभाजित होते हैं।

अधिकांश आलोचनात्मक व्याख्याकार एक ऐसे दृष्टिकोण को अपनाते हैं जिसे हम "काल्पनिक प्रेरणा" कह सकते हैं। उनका मानना है कि पवित्र आत्मा ने बस मानवीय लेखकों को लिखने के लिए प्रोत्साहित किया, ठीक वैसे ही जैसे एक कलाकार किसी अच्छे विचार या एक सुंदर दृश्य के द्वारा "प्रेरित" या प्रोत्साहित हो सकता है। इस भाव में, पवित्र आत्मा ने वास्तव में पवित्र आत्मा के शब्दों पर नियंत्रण या उनका निरीक्षण नहीं किया। अतः पवित्रशास्त्र वास्तव में अपने मानवीय लेखकों के द्वारा ही लिखा गया।

बहुत से कट्टरवादी मसीही एक ऐसा दृष्टिकोण रखते हैं जिसे हम "यांत्रिक प्रेरणा" कह सकते हैं। इस दृष्टिकोण में, पवित्र आत्मा ने मानवीय लेखकों पर ऐसा नियंत्रण रखा कि इन पुरुषों ने पवित्रशास्त्र में अपनी किसी रचनात्मकता को शामिल नहीं किया। इस दृष्टिकोण को कई बार "आलेख" भी कहा जाता है क्योंकि यह मानवीय लेखकों को केवल सचिवों के रूप में देखता है जिन्होंने उन्हीं शब्दों को लिखा जो आत्मा ने उन्हें बताए।

काल्पनिक और यांत्रिक प्रेरणा के विपरीत, बाइबल एक ऐसे दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है जिसे हम "जैविक प्रेरणा" कह सकते हैं। इस दृष्टिकोण को "जैविक" कहा जाता है क्योंकि पवित्रशास्त्र के लेखकों द्वारा अपने विचारों, शब्दों और व्यक्तित्वों का प्रयोग करते हुए उनकी स्वाभाविक लेखन प्रक्रिया को प्रकट करता है। इसलिए यह यांत्रिक से बिलकुल अलग है। परंतु यह काल्पनिक प्रेरणा से भी अलग है क्योंकि यह कहता है कि पवित्र आत्मा ने उनके लेखनों का निरीक्षण ऐसे रूपों में किया जिन्होंने निश्चित किया कि वे वही कहें जो वह चाहता था, और इस बात ने उन्हें त्रुटि से बचाया। सुनिए कैसे पतरस ने 2 पतरस 1:20-21 में प्रेरणा का वर्णन किया। उसने कहा :

> पवित्रशास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती, क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे (2 पतरस 1:20-21)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

पतरस ने पवित्रशास्त्र के मानवीय लेखकों की भूमिका या यहाँ तक कि इच्छा का इनकार भी नहीं किया। उसने इस बात पर बल दिया कि पवित्रशास्त्र का उद्‌गम पवित्र आत्मा के द्वारा हुआ, और कि पवित्र आत्मा ने उनके लेखनों का निरीक्षण किया।

इस भाव में, पवित्र आत्मा वास्तव में पवित्रशास्त्र का लेखक है, न कि केवल प्रोत्साहक। हम ऐसे ही विचारों को 2 शमूएल 23:2; प्रेरितों के काम 1:16, और 4:25; और इब्रानियों 3:7 जैसे अनुच्छेदों में पाते हैं। दूसरी ओर, बाइबल के अन्य लेखकों ने अपने लेखनों में अपनी व्यक्तिगत सहभागिता और अपने योगदानों को भी दर्शाया। सुनिए किस प्रकार सुसमाचार-लेखक लूका ने लूका 1:3 में अपने कार्य का वर्णन किया :

> मुझे भी यह उचित मालूम हुआ कि उन सब बातों का सम्पूर्ण हाल आरम्भ से ठीक-ठीक जाँच करके, उन्हें... क्रमानुसार लिखूँ (लूका 1:3)।

लूका ने अपने लेखन में पवित्र आत्मा की सहभागिता से इनकार नहीं किया। उसने केवल यह स्पष्ट किया कि उसने उसे अपनी समझ के अनुसार लिखा, और कि उन बातों को लिखा जिन्हें उसने स्वयं ठीक-ठीक जाँचा था। इस भाव में, लूका और अन्य मानवीय लेखक वास्तव में *लेखक* थे, और आलेख को प्राप्त करनेवाले केवल *सचिव* ही नहीं थे।

> पवित्र आत्मा और मानवीय लेखकों, अर्थात् पवित्रशास्त्र के लेखकों ने जैविक प्रेरणा में एक दूसरे के साथ कार्य किया। जब बाइबल का लेखक लिख रहा था तो पवित्र आत्मा उसके साथ आया और बाइबल के उस लेखक को प्रेरित, प्रोत्साहित किया कि वह उन बातों को लिखे जिसे आज हम परमेश्वर का वचन कहते हैं। अतः एक संगम था, एक साथ आना था, आत्मा के साथ संगति में लिखना जो लेखन-प्रक्रिया और मूसा, या यशायाह या पौलुस जैसे बाइबल के लेखकों का निरीक्षण कर रहा था, जो इस सामूहिक प्रयास पवित्रशास्त्र का वास्तविक लेखक था, अतः आत्मा और बाइबल के लेखकों ने एक साथ मिलकर पवित्रशास्त्र की रचना की।
>
> — डॉ. ग्रेग आर. एलीसन

अब, यद्यपि संपूर्ण पवित्रशास्त्र जैविक रूप से प्रेरणा-प्राप्त था, फिर भी हमें यह स्वीकार करना होगा कि आत्मा ने मानवीय लेखकों के साथ कई रूपों में कार्य किया। बाइबल के कुछ भाग आलेख के समान थे, जैसे कि वह समय जब परमेश्वर ने यशायाह 6:9, 10 में यशायाह से कहा कि उसे क्या कहना है। और मूसा ने कहा कि स्वयं परमेश्वर ने अपनी उंगली से दस आज्ञाओं को लिखा था, जैसा कि हम निर्गमन 31:18 में पढ़ते हैं। फिर भी, हमें यह याद रखना होगा कि पवित्रशास्त्र की पुस्तकें उसका विवरण है जो परमेश्वर ने कहा और किया। वे इन घटनाओं का वर्णन करने के लिए मानवीय लेखकों द्वारा लिखी गई पुस्तकें हैं। हमारे पास पवित्रशास्त्र की ऐसी कोई पुस्तक नहीं है जिसमें केवल परमेश्वर के द्वारा दिए गए उद्धरण ही हों।

पवित्रशास्त्र के कुछ अन्य भाग काल्पनिक प्रेरणा जैसे भी प्रतीत होते हैं, जैसे कि बुद्धि की पुस्तकें जहाँ लेखकों ने सांसारिक बातों पर ध्यान दिया। उदाहरण के लिए, नीतिवचन 30:25-28 चींटियों, बिज्जुओं, टिड्डियों, और छिपकलियों के दैनिक जीवनों पर ध्यान देते हैं। निश्चित रूप से कोई इस बात पर वाद-विवाद नहीं करेगा कि केवल पवित्र आत्मा यह ज्ञान प्रदान कर सकता है कि चींटियाँ धूपकाल में भोजन वस्तुएँ बटोरती हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

कुछ भी हो, पवित्रशास्त्र कम से कम दो बातों को प्रकट करता है : पहली, पवित्रशास्त्र के मानवीय लेखक केवल ऐसे सचिव ही नहीं थे जिन्होंने आत्मा से सुनकर शब्दों को लिखा। और दूसरी, काल्पनिक प्रेरणा के साथ संयोगवश समानता के बावजूद भी पवित्र आत्मा कलीसिया के समक्ष परमेश्वर के वचन को प्रकट करने, और अपने प्रेरणा-प्राप्त मानवीय लेखकों के माध्यम से इसे कलीसिया के लिए लेखनबद्ध करने में हमेशा गंभीरता से शामिल था।

पवित्रशास्त्र के पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरणा को देख लेने के बाद, आइए अब हम बाइबल में उसके प्रमुख संदेश के बारे में बात करें।

संदेश

हम पवित्रशास्त्र के मुख्य संदेश का वर्णन अलग-अलग रूपों में कर सकते हैं। पहला, हम इसे मनुष्यजाति की सृष्टि, पाप में पतन, छुटकारे, और अंतिम महिमामंडन के इतिहास के रूप में देख सकते हैं। या हम परमेश्वर पर मनुष्यजाति के विश्वास या उसके प्रति मनुष्यजाति के कर्त्तव्य के बारे में बात करने के द्वारा और अधिक विधिवत दृष्टिकोण का अनुसरण कर सकते हैं। जैसे कि वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी का उत्तर 3 कहता है :

> पवित्रशास्त्र एक सिद्धांत के रूप में सिखाता है कि मनुष्य को परमेश्वर के विषय में क्या विश्वास करना है, और परमेश्वर मनुष्य से किन कर्त्तव्यों की अपेक्षा रखता है।

या हम बाइबल के प्रमुख संदेश को यीशु के उन कार्यों में सारगर्भित कर सकते हैं जो उसने परमेश्वर के प्रति प्रेम और पड़ोसी के प्रति प्रेम के संबंध में किए। मत्ती 22:37-40 में यीशु ने यह सिखाया :

> "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख।" बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। ये ही दो आज्ञाएँ सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार हैं (मत्ती 22:37-40)।

जब यीशु ने "व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं" कहा, तो उसके कहने का अर्थ पूरा पुराना नियम था। अतः हम पुराने नियम को — और इस तरह से नए नियम को भी — इन दो महान आज्ञाओं का प्रयोग करके सारगर्भित कर सकते हैं।

परंतु जब हम पवित्रशास्त्र में पवित्र आत्मा के प्रमुख संदेश के बारे में बात करते हैं, तो हमारे मन में कुछ और होता है — कुछ ऐसा जो इन सारे सारांशों को समाहित करता है। आधुनिक पाठक अक्सर इस बात से चूक जाते हैं कि ये सारांश पूरी तरह से वाचाई हैं। और यह अपनी कलीसिया के लिए पवित्र आत्मा का सबसे महत्वपूर्ण संदेश है। पवित्रशास्त्र मूल रूप से एक *वाचाई प्रलेख* है। यह परमेश्वर को उसके वाचाई लोगों के समक्ष ऐसे रूपों में प्रकट करता है जो उसके साथ हमारे संबंध को परिभाषित और स्पष्ट करते हैं। यह हमारे प्रति उसके वाचाई उपकार को दर्शाता है। यह उस मानवीय विश्वासयोग्यता को स्पष्ट करता है जिसकी वह हमसे अपेक्षा करता है। और यह हमारे उद्धार और दंड सहित हमारी आज्ञाकारिता और अनाज्ञाकारिता के परिणामों की रूपरेखा भी प्रदान करता है। किसी न किसी रूप में पवित्रशास्त्र का प्रत्येक अनुच्छेद इन आधारभूत वाचाई कार्यों को पूरा करता है।

उदाहरण के लिए, जब धर्मविज्ञानी मनुष्यजाति की सृष्टि, पतन, छुटकारे और महिमामंडन की कहानी बताते हैं, तो वे विशिष्ट रूप से प्रत्येक अवधि के साथ जुड़े विभिन्न वाचाई प्रबंधनों के द्वारा ऐसा करते हैं। इसलिए यदि हम इन रूपों में पवित्रशास्त्र के संदेश का वर्णन करते हैं, तो हम सामान्यतः आदम,

नूह, अब्राहम, मूसा, दाऊद, और यीशु के वाचाई प्रबंधनों पर ध्यान देते हैं। और इनमें से प्रत्येक प्रबंधन हमें सिखाता है कि परमेश्वर के साथ वाचा में बंधे होने का क्या अर्थ है।

यदि हम पवित्रशास्त्र के प्रमुख संदेश के वेस्टमिंस्टरलघु प्रश्नोत्तरी के सारांश पर ध्यान देते हैं तो हम देखते हैं कि वह परमेश्वर के उपकार सहित स्वयं परमेश्वर पर, और उस मानवीय विश्वासयोग्यता पर ध्यान देता है जिसकी वह अपेक्षा करता है — अर्थात् वाचाई संबंध की दोनों विशेषताओं की। और यदि हमें बाइबल के संदेश को सारगर्भित करना हो जैसे कि यीशु ने मत्ती 22 में किया, तो हम स्पष्ट रूप से इसकी वाचाई प्रकृति को देख सकेंगे।

परमेश्वर से प्रेम करने की आज्ञा व्यवस्थाविवरण 6:5 से ली गई है। वह अध्याय अपने लोगों के साथ परमेश्वर के वाचाई संबंध का एक अद्‌भुत सारांश प्रस्तुत करता है। पहला, यह इस्राएल को स्मरण दिलाता है कि वे उन प्रतिज्ञाओं के अनुसार परमेश्वर के वाचाई लोग हैं जो उसने उनसे की हैं। दूसरा, यह इस्राएल को मिस्र के दासत्व से छुड़ाने में परमेश्वर के ईश्वरीय उपकार की याद दिलाता है। तीसरा, यह सच्चे और प्रेमी मन के साथ परमेश्वर की सब विधियों को मानने में मानवीय विश्वासयोग्यता की आवश्यकता पर बल देता है। और चौथा, यह उन महान आशीषों को स्पष्ट करता है जो उसके लोग प्राप्त करेंगे यदि वे उसकी विधियों को मानते हैं, और उन भयानक शापों को भी जिनको वे सहेंगे यदि वे उसके विरुद्ध विद्रोह करते हैं। अतः जब हम व्यवस्थाविवरण 6:5 को देखते हैं तो हमें समझना है कि परमेश्वर से प्रेम करने की आज्ञा में ये सब विचार शामिल होते हैं।

> जब हमें परमेश्वर से अपने पूरे मन, प्राण, हृदय से प्रेम करने की आज्ञा दी जाती है, तो यह हमारे जीवनों के सब क्षेत्रों को प्रभावित करती है। दूसरे शब्दों में, इसका अनुवाद ऐसे भी किया जा सकता है, "अपने पूरे अस्तित्व के साथ परमेश्वर से प्रेम करो।" प्रभु जिसने हमसे वाचा बाँधी है, उसने हमें विश्वासयोग्य बनने की प्रतिबद्धता भी दी है, और वाचा के दूसरे सहभागी के रूप में हमारा कर्त्तव्य है कि हम उस परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहें जिसने हमसे वाचा बाँधी है... दूसरे शब्दों में, अपने मन, अपने हृदय, और अपने प्राण से परमेश्वर से प्रेम करना परमेश्वर के प्रति हमारी विश्वासयोग्यता का प्रत्युत्तर है, परमेश्वर के प्रति हमारी वफ़ादारी का प्रत्युत्तर है। हम उससे यह कहते हैं, "हे प्रभु, हम अपने पूरे अस्तित्व को तेरे सामने रख रहे हैं।"
>
> — पास्टर ओर्नान क्रूज़, अनुवाद

अपने पड़ोसियों से प्रेम करने की आज्ञा भी मूल रूप से वाचाई ही है। जिस पद को यीशु ने विशेष रूप से उद्धृत किया वह लैव्यव्यवस्था 19:18 है। व्यवस्थाविवरण 6 के समान लैव्यव्यवस्था 19 भी परमेश्वर और इस्राएल के बीच के वाचाई संबंध पर बल देता है। हम विशेष रूप से इसे दोहराए गए इस वाक्यांश में देखते हैं, "मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।" इस्राएल के परमेश्वर के रूप में उसकी वाचा में पूरा समुदाय शामिल था। इसलिए यीशु ने परमेश्वर के राज्य में अपने साथी नागरिक के रूप में अपने पड़ोसियों से प्रेम करने पर बल दिया। हमें एक दूसरे को आशीष देनी है और बदला लेने और दुर्व्यवहार जैसी बातों को दूर रखना है क्योंकि परमेश्वर ने वाचाई समाज के आधार के रूप में इसी बात को स्थापित किया है।

पवित्रशास्त्र का संपूर्ण संदेश परमेश्वर की वाचा से संबंधित है। और फिर चाहे हम इसे इतिहास के रूप में या विधिवत धर्मविज्ञान के रूप में, या फिर परमेश्वर और मनुष्यजाति के साथ संगति में जीवन जीने के व्यावहारिक विषय के रूप में देखें, यह सच बना रहता है। संपूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर और उसके लोगों के बीच वाचाई संबंध पर आधारित है। और प्रेरणा-प्राप्त पवित्रशास्त्र में पवित्र आत्मा ने बार-बार व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से अपने लोगों के प्रति परमेश्वर की प्रतिबद्धता के इस संदेश पर बल दिया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

अब जबकि हमने प्रेरणा और वाचाई संदेश के आधार पर पवित्रशास्त्र के विषय में पवित्र आत्मा के विधानीय कार्य का अध्ययन कर लिया है, इसलिए आइए इसके उद्देश्य पर ध्यान दें।

उद्देश्य

यह मानते हुए कि पवित्रशास्त्र में पवित्र आत्मा का मुख्य संदेश वाचाई है, इसलिए पवित्रशास्त्र का मुख्य उद्देश्य भी वाचाई होना अवश्य है। इस बात को मन में रखना महत्वपूर्ण है कि क्योंकि पवित्रशास्त्र पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरणा-प्राप्त था, इसलिए मानवीय लेखकों के उद्देश्य हमेशा आत्मा के उद्देश्यों से सहमत होते थे। और हम ऐसे स्थानों पर ध्यान देने के द्वारा इस बात की पुष्टि कर सकते हैं कि यह एकीकृत उद्देश्य वाचाई था जहाँ उन्होंने इसे अपेक्षाकृत प्रत्यक्ष रूप से कहा है।

हम ऐसे चार तरीकों का उल्लेख करेंगे जिनमें आत्मा ने अपने वाचाई उद्देश्यों को प्रकट किया। पहला, पवित्रशास्त्र अपने लेखकों और मूल पाठकों को परमेश्वर के वाचाई समुदाय के सदस्यों के रूप में देखता है।

वाचाई समुदाय

नया नियम उन प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के द्वारा लिखा गया था जो परमेश्वर के वाचाई दूतों के रूप में सेवा करते थे। उनका कार्य परमेश्वर की वाचा के प्रति परमेश्वर के लोगों को उत्तरदाई ठहराना था। इससे बढ़कर, नए नियम की अधिकांश पत्रियाँ, और साथ ही साथ प्रकाशितवाक्य की पुस्तक स्पष्ट रूप से अपने पाठकों का परिचय कलीसियाओं के रूप में देती हैं, जो अक्सर अलग-अलग स्थानों में पाई जाती थीं। इब्रानियों की पुस्तक एक महत्वपूर्ण अपवाद है क्योकि अपने पाठकों के बारे में नहीं बताती। परंतु फिर भी यह अंत में अभिवादनों को शामिल करती है जो दर्शाते हैं कि यह पुस्तक भी कलीसिया को लिखी गई थी। पहला यूहन्ना की पुस्तक विशेष रूप से इसके पाठकों को नहीं दर्शाती परंतु यह स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि इसका पाठक मसीही है। पहला और दूसरा तीमुथियुस, तथा दूसरा और तीसरा यूहन्ना की पुस्तकें विशेष रूप से अलग-अलग लोगों को लिखी गई थीं। परंतु वे भी ऐसे प्रमाण दर्शाती हैं कि उनके पाठकों का उद्देश्य एक बड़ी कलीसिया के लिए था, और नए नियम में उनका शामिल किया जाना इस बात की पुष्टि करता है। ऐसा ही कुछ लूका और प्रेरितों के काम की पुस्तकों पर लागू होता है, जो अपने आरंभिक पाठक के रूप में थियुफिलुस का नाम दर्शाती हैं। और सुसमाचार की शैली, और पुस्तकों में दी गई टिप्पणियाँ तर्क देती हैं कि मत्ती. मरकुस और यूहन्ना के मूल पाठक कलीसिया ही है।

और निस्संदेह पुराने नियम में ऐसे बहुत से कथन पाए जाते हैं जो इसके वाचाई पाठकों को भी प्रकट करते हैं। बहुत से भविष्यवक्ताओं ने यहूदा या इस्राएल के रूप में अपने पाठकों को विशेष रूप से प्रकट किया। और अन्यजाति के राष्ट्रों से बात करनेवाले भविष्यवक्ताओं — जैसे कि ओबद्याह, योना और नहूम — ने अपनी पुस्तकें परमेश्वर के वाचाई लोगों के लिए लिखीं। रोमियों 9:4 और नए नियम के अन्य कई अनुच्छेद तर्क देते हैं कि पुराना नियम परमेश्वर के लोगों के लिए लिखा गया था। और ऐसे बहुत से सूचक हैं जो दर्शाते हैं कि पुराने नियम के पाठक परमेश्वर के वाचाई समुदाय के लोग थे। व्यवस्थाविवरण 4:8 में मूसा के शब्दों पर ध्यान दें :

> फिर कौन ऐसी बड़ी जाति है जिसके पास ऐसी धर्ममय विधि और नियम हों, जैसी कि यह सारी व्यवस्था जिसे मैं आज तुम्हारे सामने रखता हूँ? (व्यवस्थाविवरण 4:8)

मूसा ने कहा कि व्यवस्था के होने ने इस्राएल को दूसरी जातियों से अलग बनाया। केवल उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था को प्राप्त किया था क्योंकि केवल वे ही परमेश्वर के वाचा के लोग थे। हम इसी

विचार को निर्गमन 24:1-12 में देखते हैं। वहाँ मूसा ने कहा था कि दस आज्ञाएँ और वाचा की पुस्तक विशेष रूप से परमेश्वर के साथ इस्राएल के वाचाई संबंध के विषय में थीं।

यह वाचाई पाठक-समूह 2 राजाओं 22, 23 में भी स्पष्ट है जहाँ यहूदा के राजा योशिय्याह ने परमेश्वर के साथ इस्राएल की वाचा को नया बनाया। इन अध्यायों में याजक हिलकिय्याह को मंदिर में वह मिला जिसे उसने "व्यवस्था की पुस्तक" कहा। बहुत से विद्वान मानते हैं कि यह व्यवस्थाविवरण की पुस्तक थी। स्पष्ट रूप से, इसे कई वर्षों तक रख छोड़ा गया और इसकी उपेक्षा की गई। जब उसने यह पुस्तक पढ़ी तो उसने इसके वाचाई अर्थों को महसूस किया और इसे राजा योशिय्याह के पास भिजवा दिया। और जब योशिय्याह ने यह पुस्तक पढ़ी तो उसने इस्राएल की सभा — पुराने नियम की कलीसिया — के समक्ष इस पुस्तक को पढ़ने के द्वारा प्रत्युत्तर दिया। उसने इसे "व्यवस्था की पुस्तक" कहने के द्वारा इसके वाचाई उद्देश्य पर बल दिया। और उसने स्वयं को और अपने लोगों को इसका पालन करने के प्रति समर्पित किया। 2 राजाओं 23:2-3 में इस विवरण को ध्यान से सुनें :

> योशिय्याह ने ... जो वाचा की पुस्तक यहोवा के भवन में मिली थी, उसकी सब बातें उनको पढ़कर सुनाईं। तब राजा ने खम्भे के पास खड़े होकर यहोवा से इस आशय की वाचा बाँधी, कि मैं यहोवा के पीछे पीछे चलूँगा, और अपने सारे मन और सारे प्राण से उसकी आज्ञाएँ, चितौनियाँ और विधियों का नित पालन किया करूँगा, और इस वाचा की बातों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं पूरी करूँगा; और सारी प्रजा वाचा में सम्भागी हुई (2 राजाओं 23:2-3)।

अनुच्छेदों का एक दूसरा समूह जो पवित्रशास्त्र में आत्मा के वाचाई उद्देश्य को दर्शाते हैं, वे हैं जिन्हें परमेश्वर के ईश्वरीय उपकार को दर्शाने के लिए लिखा गया था।

ईश्वरीय उपकार

जैसा कि हमने कहा है, परमेश्वर की वाचा में तीन मूलभूत तत्व पाए जाते हैं : परमेश्वर की ईश्वरीय भलाई; जिस मानवीय विश्वासयोग्यता की वह मांग करता है; और आज्ञाकारिता तथा अनाज्ञाकारिता के परिणाम। जब बाइबल के किसी लेखक ने अपने उद्देश्य के रूप में इनमें से किसी एक का उल्लेख किया तो उसका इरादा अपने लोगों के साथ परमेश्वर की वाचा को स्पष्ट करने, उसकी पुष्टि करने या उस पर बल देने का था।

सुनिए किस प्रकार भजन 102:17-18 परमेश्वर के ईश्वरीय उपकार के बारे में बात करता है :

> [यहोवा] लाचार की प्रार्थना की ओर मुँह करता है, और उनकी प्रार्थना को तुच्छ नहीं जानता। यह बात आनेवाली पीढ़ी के लिये लिखी जाएगी, और एक जाति जो सिरजी जाएगी वही याह की स्तुति करेगी (भजन 102:17-18)।

भजन 102 का संदर्भ दर्शाता है कि वक्ता को सहायता की आवश्यकता थी, और कि उसने कृपा, दया और रक्षा के लिए परमेश्वर की ओर निहारा। उसने परमेश्वर को संपूर्ण संसार पर एक बड़े सम्राट के रूप में दर्शाया, और उसने परमेश्वर से अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की प्रार्थना की। उसके भजन का उद्देश्य भविष्य की पीढ़ियों को यह बताना था कि परमेश्वर ने उसे कैसे बचाया था ताकि वे भी परमेश्वर के उपकार को देख सकें और उसकी स्तुति कर सकें। और परमेश्वर के उपकार को पहचानने की यह बुलाहट स्पष्ट रूप से वाचाई थी। हम परमेश्वर के उपकार को पद 1:3-4 में लूका के सुसमाचार के परिचय में भी देखते हैं जहाँ लूका ने यह लिखा :

> इसलिये, हे श्रीमान् थियुफिलुस, मुझे भी यह उचित मालूम हुआ कि उन सब बातों का सम्पूर्ण हाल आरम्भ से ठीक-ठीक जाँच करके, उन्हें तेरे लिये क्रमानुसार लिखूँ

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

> ताकि तू यह जान ले कि वे बातें जिनकी तू ने शिक्षा पाई है, कैसी अटल हैं (लूका 1:3-4)।

लूका के सुसमाचार का प्रमुख संदेश हमें बताता है कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को देहधारी होने, हमारे बदले बलिदानी मृत्यु मरने, मृतकों में से जी उठने ताकि हम जीवित रहें, और हमारे मसीहा या ख्रिस्त के रूप में राज्य करने के लिए फिर से स्वर्ग पर चढ़ जाने के लिए भेजा। इससे बढ़कर कोई और भलाई या कृपा संभव नहीं है! अतः जब लूका ने थियुफिलुस को इन सत्यों की अटलता को जानने में सहायता करने के लिए लिखा तो उसका आंशिक उद्देश्य परमेश्वर के उपकार का वर्णन करना था। और इसमें हम इस पुस्तक के लिए आत्मा के वाचाई उद्देश्य को देख सकते हैं।

ऐसे ही परंतु और अधिक प्रत्यक्ष रीति से प्रेरित यूहन्ना ने भी यूहन्ना 20:30-31 में अपने सुसमाचार के उद्देश्य के रूप में मसीह के द्वारा परमेश्वर के उपकार का उल्लेख किया। उसने लिखा :

> यीशु ने और भी बहुत से चिह्न... दिखाए... परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ (यूहन्ना 20:30-31)।

> लूका 7 में हम पढ़ते हैं कि कैसे एक सूबेदार ने यीशु से अपने प्रिय सेवक को चंगा करने की विनती की थी, और केवल अपने वचन के द्वारा यीशु ने उस सेवक को चंगा कर दिया था। और फिर उस घटना के ठीक बाद हम पढ़ते हैं कि कैसे यीशु की भेंट नाइन नगर में एक शवयात्रा से होती है, और वहाँ वह एक विधवा को पाता है जो अपने पुत्र की मृत्यु के कारण फूट-फूटकर रो रही थी, और एक बार फिर से यीशु अपने वचन से उस लड़के को जीवित कर देता है... अतः यह दर्शाता है कि यीशु कौन है, परंतु उसके आश्चर्यकर्म यह भी दिखाते हैं कि परमेश्वर का राज्य पुनर्स्थापना के विषय में है, कि इस सेवक और विधवा के इस पुत्र को उनके परिवारों को फिर से सौंप दिया गया, स्वरूप-धारकों के रूप में उन्हें उनकी भूमिका फिर से प्रदान कर दी गई, ताकि वे अपने काम पर लौट सकें, कि वे फिर से मंदिर जाकर परमेश्वर की आराधना कर सकें, कि वे अपने समुदाय की खुशहाली में एक बार फिर से योगदान दे सकें। अतः यीशु के आश्चर्यकर्म न केवल यह दिखाते हैं कि यीशु कौन है, बल्कि उसके बड़े अनुग्रह और उपकार को भी, अर्थात् पुनर्स्थापना के उसके उपकार को।
>
> — डॉ. ग्रेग पैरी

यीशु के आश्चर्यकर्म परमेश्वर के उपकार के उदाहरण थे। उसने बीमारों और लंगड़ों को चंगा किया। उसने भूखों को भोजन खिलाया। उसने दुष्टात्मा-ग्रस्त लोगों को ठीक किया। उसने मृतकों को जिलाया। सारांश में, उसने लोगों को पृथ्वी पर के परमेश्वर के राज्य की आशीषों का पूर्वाभास प्रदान किया। उपकार के ये कार्य ऐसे थे जिनके योग्य कोई नहीं बन सकता था और कई विषयों में तो जिन्होंने इन्हें पाया था, उन्होंने इनके विषय में विनती भी नहीं की थी। ये पूर्ण रूप से परमेश्वर की भलाई, कृपा और दया के कारण किए गए थे।

यूहन्ना का उद्देश्य परमेश्वर के उपकार को दर्शाना था, ताकि हम उसके पुत्र के द्वारा मिलनेवाले उद्धार के लिए उसकी ओर खिंचे आएँ। जब हम यह याद करते हैं कि संपूर्ण पवित्रशास्त्र पवित्र आत्मा की प्रेरणा से रचा गया था, तो यह देखना कठिन नहीं है कि कैसे यह अनुच्छेद आत्मा के वाचाई उद्देश्य का समर्थन करता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

आत्मा के वाचाई उद्देश्य को दर्शानेवाला तीसरे प्रकार का अनुच्छेद मानवीय विश्वासयोग्यता को प्रदर्शित करता है।

मानवीय विश्वासयोग्यता

बहुत बार जब बाइबल के लेखकों ने लेखन के अपने उद्देश्यों को बताया, तो उन्होंने मानवीय विश्वासयोग्यता का उल्लेख किया। उन्होंने अपने पाठकों को केवल इतिहास से अवगत कराने, या उनकी बुद्धि या प्रसन्नता को बढ़ाने के लिए ही नहीं लिखा। आत्मा की प्रेरणा के द्वारा उन्होंने अपने पाठकों को परमेश्वर की आज्ञा मानने को प्रेरित करने के लिए लिखा। जैसा कि पौलुस ने रोमियों 1:5 में लिखा :

> उसके द्वारा हमें अनुग्रह और प्रेरिताई मिली कि... लोग विश्वास करके उसकी मानें (रोमियों 1:5)।

और जैसा कि उसने 2 तीमुथियुस 3:16 में लिखा :

> सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिये लाभदायक है (2 तीमुथियुस 3:16)।

बाइबल का प्रत्येक अनुच्छेद हमें सिखाता है कि हम कैसे विश्वासयोग्य बनें और कैसे परमेश्वर की अपेक्षाओं के अनुसार जीवन जीएँ। दूसरे शब्दों में, प्रत्येक अनुच्छेद हमें मानवीय विश्वासयोग्यता की हमारी वाचाई जिम्मेदारी को सिखाता है। यह विचार व्यवस्थाविवरण 29:29 में भी स्पष्ट है जो कहता है :

> जो [बातें] प्रगट की गई हैं वे सदा के लिये हमारे और हमारे वंश के वश में रहेंगी, इसलिये कि इस व्यवस्था की सब बातें पूरी की जाएँ (व्यवस्थाविवरण 29:29)।

हम इसे 1 यूहन्ना 2:1 के इन शब्दों में भी देख सकते हैं :

> हे मेरे बालको, मैं ये बातें तुम्हें इसलिये लिखता हूँ कि तुम पाप न करो (1 यूहन्ना 2:1)।

कुछ स्थानों पर निर्देश और अधिक सटीक हैं। उदाहरण के लिए, यहेजकेल 43:11 को इस बात के आश्वासन के स्पष्ट उद्देश्य के साथ लिखा गया था कि भविष्य का मंदिर परमेश्वर द्वारा दिए गए विशिष्ट निर्देशों के अनुसार बनाया जाएगा। और 1 कुरिन्थियों 5:11 में पौलुस ने इसलिए लिखा ताकि कुरिन्थस के मसीही ऐसे लोगों के साथ संगति न करें जो मसीह में विश्वास की बात तो करते हों परंतु साथ ही अनैतिक जीवन जीते हों।

अब हमें इस बात पर बल देना चाहिए कि मानवीय विश्वासयोग्यता जिसकी अपेक्षा परमेश्वर अपनी कलीसिया से करता है वह केवल बाहरी आज्ञाकारिता ही नहीं है। पूरे पवित्रशास्त्र में आत्मा ने यह स्पष्ट किया कि सच्ची वाचाई विश्वासयोग्यता निष्ठावान और हृदय से निकली हुई होती है, और परमेश्वर के प्रति प्रेम से प्रेरित होती है। व्यवस्थाविवरण 6:1-6 के शब्दों पर ध्यान दें :

> यह वह आज्ञा, और वे विधियाँ और नियम हैं जो तुम्हें सिखाने की तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने आज्ञा दी है... तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना। और ये आज्ञाएँ... तेरे मन में बनी रहें (व्यवस्थाविवरण 6:1-6)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

इस अनुच्छेद में वह पद पाया जाता है जिसे यीशु ने मत्ती 22:37 में उद्धृत किया था — वह जिसे उसने “सबसे बड़ी आज्ञा” कहा। और यह इस विचार के साथ समाप्त होता है कि व्यवस्था हमारे मनों में लिखी होनी चाहिए।

परमेश्वर से प्रेम करना केवल भावना का विषय नहीं है, और यह केवल आज्ञाकारिता का भी विषय नहीं है। इसमें ये दोनों शामिल होते हैं। यह परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता और वफ़ादारी है जिसे परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति हृदय से निकलनेवाली आज्ञाकारिता में व्यक्त किया जाता है। हम प्रेम के ऐसे ही विवरणों को व्यवस्थाविवरण 11:13, और 30:1-6; और यहोशू 22:5 जैसे स्थानों में देखते हैं। और सुनिए यूहन्ना 14:15 में यीशु ने क्या कहा :

> यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे (यूहन्ना 14:15)।

जब पवित्र आत्मा ने अपने प्रेरणा-प्राप्त मानवीय लेखकों के द्वारा अपनी कलीसिया से बात की तो उसका उद्देश्य कभी यह नहीं था कि परमेश्वर के प्रति प्रेम ही अनुसरण करने के लिए एकमात्र नियम बने। बल्कि उसका उद्देश्य हमसे यह था कि हम परमेश्वर के प्रति प्रेम की एक अभिव्यक्ति के रूप में प्रत्येक वाचाई अपेक्षा की पूर्णता को समझें।

> परमेश्वर इस बात को महत्व देता है कि हम उसके प्रति आज्ञाकारी क्यों हैं, और वह वास्तव में चाहता है कि हमारी आज्ञाकारिता उसके प्रति हो क्योंकि हम उससे प्रेम करते हैं। ऐसे कुछ ही कारण हैं कि क्यों कोई व्यक्ति किसी बात के लिए आज्ञाकारी होगा। पहला दंड का डर है; कि हम नहीं चाहते कि हमारी अनाज्ञाकारिता का प्रभाव हम पर पड़े... हमारे लिए एक अन्य विकल्प यह होगा कि हम आज्ञाकारी होंगे क्योंकि हम सोचते हैं कि हम हैं, हम कुछ हासिल करेंगे, हमें कुछ प्राप्त होगा, हम कुछ कमा लेंगे.. पर फिर भी, परमेश्वर नहीं चाहता कि हमारे अंदर एक ऐसा भाव हो कि हमने किसी स्तर पर उसके अनुग्रह को अपनी योग्यता से अर्जित किया है, और निश्चित रूप से हम अपनी योग्यता से अपने उद्धार को प्राप्त नहीं कर सकते। अतः यह हमें वास्तव में ऐसे प्रेम की प्रेरणा प्रदान करता कि हम परमेश्वर के प्रति प्रेम के कारण परमेश्वर की आज्ञा मानें। यीशु यह तर्क देता है। वह कहता है, “यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे। इसी कारण मैं चाहता हूँ कि तुम आज्ञा मानो, क्योंकि तुम मुझसे प्रेम करते हो।” क्योंकि जब तुम प्रेम के कारण आज्ञा मानते हो तो तुम अपने बारे में नहीं सोचते। भय के कारण आज्ञाकारिता मेरे अपने विषय में है। कुछ पाने के लालच के कारण की गई आज्ञाकारिता मेरे अपने विषय में है। प्रेम के कारण की गई आज्ञाकारिता उसके विषय में है जिससे मैं प्रेम करता हूँ, वह मेरे प्रिय के बारे में है, यह उसे सम्मान देने के विषय में है जिसके प्रति मैं आज्ञाकारी हूँ, या जिसकी मैं सेवा करता हूँ या किसी तरह से जिसका मैं सम्मान करता हूँ। इसलिए जब हम प्रेम के कारण परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं तो यह ध्यान को हमारे ऊपर से हटाकर उस पर और उसकी भलाई पर और उसकी महानता पर लगाता है।
>
> — डॉ. डान लैसिक

पवित्रशास्त्र में आत्मा के वाचाई उद्देश्य को प्रदर्शित करनेवाले जिस चौथे और अंतिम प्रकार के अनुच्छेद का हम उल्लेख करेंगे वह वाचाई परिणामों पर बल देता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

परिणाम

जैसे कि आपको याद होगा परमेश्वर के साथ वाचा में होने के परिणामों में आज्ञाकारिता के लिए आशीषें और अनाज्ञाकारिता के लिए दंड शामिल होते हैं। पवित्रशास्त्र के बहुत से अनुच्छेद विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता के माध्यम से कलीसिया को परमेश्वर की आशीषों का अनुसरण करने के लिए उत्साहित करने के द्वारा आत्मा के वाचाई उद्देश्य को प्रकट करते हैं। उदाहरण के लिए व्यवस्थाविवरण 6:1-4 जैसे अनुच्छेद दिखाते हैं हैं कि परमेश्वर की आज्ञाओं का उद्देश्य यह था ताकि परमेश्वर के लोग अपनी आज्ञाकारिता के द्वारा उसकी आशीषों का अनुसरण करें। और यहोशू 1:8 कहता है कि व्यवस्था की पुस्तक को ऐसी आज्ञाकारिता को उत्पन्न करने के लिए लिखा गया जो समृद्धि तथा सफलता की ओर अगुवाई करती है। पहला राजाओं 2:3, 4 हमें बताते हैं कि मूसा की व्यवस्था के उद्देश्य में परमेश्वर के लोगों को यह सिखाना शामिल था कि वे कैसे उसकी आशीषों में समृद्ध बनें, और कैसे दाऊद के अनंत राजवंश की आशीष को उत्पन्न करें। और सुनिए रोमियों 15:4 में पौलुस ने पुराने नियम के विषय में क्या लिखा :

> जितनी बातें पहले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गईं हैं कि हम धीरज और पवित्रशास्त्र के प्रोत्साहन द्वारा आशा रखें (रोमियों 15:4)।

इसी प्रकार यूहन्ना 20:31 में यूहन्ना ने कहा कि उसने अपना सुसमाचार लोगों को यीशु के द्वारा अनंत जीवन की परमेश्वर की वाचाई आशीष की ओर ले जाने के लिए लिखा। और 1 यूहन्ना 5:13 में उसने कहा कि उसने यह इसलिए लिखा ताकि विश्वासी अनंत जीवन के प्रति आश्वस्त हो सकें।

पवित्रशास्त्र भी परमेश्वर के शापों के विरुद्ध चेतावनी देने के अपने उद्देश्य को दर्शाती है। व्यवस्थाविवरण 28:58 सिखाता है कि यदि परमेश्वर के लोग व्यवस्थाविवरण में लिखे वचनों का पालन नहीं करते तो वे उन्हें उसके शापों को सहना पड़ेगा। यिर्मयाह 36:6, 7 दर्शाते हैं कि यिर्मयाह की भविष्यवाणी की मूल पुस्तक का उद्देश्य परमेश्वर के लोगों में पश्चाताप को उत्पन्न करना था ताकि वे उसके क्रोध से बच सकें। और 1 कुरिन्थियों 10:11, 12 में पौलुस ने यह कहते हुए पुराने नियम के उद्देश्य पर टिप्पणी की कि जिन परेशानियों का सामना परमेश्वर के पुराने लोगों ने किया उन्हें भावी पीढ़ियों के लिए चेतावनियों के रूप में लिखा गया था ताकि वे उसी प्रकार के दंड से बच सकें।

जैसा कि हम देख चुके हैं, पवित्रशास्त्र अति वाचा-आधारित है। यह पवित्र आत्मा के द्वारा रचा गया है जिसमें उसने अपने प्रतिनिधियों को प्रेरणा प्रदान की और उनका निरीक्षण किया ताकि वह अपने वाचाई लोगों को अपना वाचाई संदेश दे सके। और यदि हम उस संदेश के प्रति विश्वासयोग्य रहते हैं तो हम उसकी आशीषों का हमेशा तक आनंद लेते रहेंगे।

अब जबकि हमने आत्मा के वाचाई अनुग्रह और उसके द्वारा पवित्रशास्त्र को प्रदान किए जाने के संबंध में कलीसिया में पवित्र आत्मा के विधानीय कार्य का अध्ययन कर लिया है, इसलिए हम अपने अंतिम मुख्य विषय को संबोधित करने के लिए तैयार हैं, जो यह है : वे आत्मिक वरदान जो वह अपने वाचाई समुदाय को प्रदान करता है।

आत्मिक वरदान

जब हम विधिवत धर्मविज्ञान में आत्मिक वरदानों या “आत्मा के वरदानों” के बारे में बात करते हैं, तो हमारे मन में ये बातें होती हैं :

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

> पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के प्रकटीकरण जो मनुष्यों में योग्यताओं को उत्पन्न करते या बढ़ाते हैं, विशेषकर कलीसिया के लाभ के लिए।

कुछ आत्मिक वरदान स्वाभाविक योग्यताओं और प्रतिभाओं के जैसे होते हैं, इसलिए कई बार यह स्पष्ट नहीं होता कि किन लोगों में वे हैं और किनमें नहीं हैं। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति स्वाभाविक रूप से एक अच्छा शिक्षक हो सकता है, परंतु दूसरा केवल शायद इसलिए अच्छा पढ़ा सकता है क्योंकि पवित्र आत्मा उसे ऐसा करने में सक्षम बनाता है। अन्य वरदान चमत्कारिक होते हैं, जैसे कि ऐसे कार्य करना जिन्हें केवल अलौकिक रीति से ही स्पष्ट किया जा सकता है, इसलिए यह स्पष्ट हो जाता है कि वे आत्मिक वरदान हैं और केवल स्वाभाविक योग्यताएँ नहीं हैं। परंतु सब विषयों में, आत्मा के वरदान में एक व्यक्ति के माध्यम से पवित्र आत्मा कार्य करता है ताकि वह नियति विधान के सामर्थी कार्य को पूरा कर सके।

आत्मिक वरदानों की हमारी चर्चा तीन भागों में विभाजित होगी। पहला, हम उनके उद्देश्यों को परिभाषित करेंगे। दूसरा, हम पवित्रशास्त्र में उनके इतिहास का सर्वेक्षण करेंगे। और तीसरा, हम उनके वर्तमान प्रयोग के कुछ सुसमाचारिक दृष्टिकोणों की खोज करेंगे। आइए पहले उनके उद्देश्य को देखें।

उद्देश्य

जब हमने अभी-अभी आत्मिक वरदानों को परिभाषित किया था तो हमने कहा था कि वे "मनुष्यों में योग्यताओं को उत्पन्न करते या बढ़ाते हैं, विशेषकर कलीसिया के लाभ के लिए।" यह एक महत्वपूर्ण विशिष्टता है। आत्मिक वरदान परमेश्वर के साथ एक व्यक्ति के संबंध को बढ़ाने के उद्देश्य के साथ नहीं दिए जाते।

यह निश्चित रूप से सत्य है कि जब पवित्र आत्मा हमारे द्वारा कार्य करता है तो हम व्यक्तिगत रूप से लाभ प्राप्त करते हैं। परंतु यदि कोई स्पष्ट वरदान कलीसिया को लाभ प्रदान नहीं करता तो यह संभव है कि इसका दुरूपयोग हो रहा है, या फिर वह आत्मिक वरदान है ही नहीं। वास्तव में, यह 1 कुरिन्थियों 12–14 में पौलुस का एक मुख्य बिंदु है, जहाँ हम पवित्रशास्त्र में आत्मा के वरदानों पर एक बहुत ही व्यापक शिक्षा को पाते हैं। सुनिए पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 12:1-7 में क्या कहा :

> हे भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम आत्मिक वरदानों के विषय में अनजान रहो... वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है; और सेवा भी कई प्रकार की हैं, परन्तु प्रभु एक ही है; और प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के हैं, परन्तु परमेश्‍वर एक ही है, जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है। किन्तु सब के लाभ पहुँचाने के लिये हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है (1 कुरिन्थियों 12:1-7)।

पौलुस ने वरदानों, सेवा और कार्य को एक स्तर पर रखा क्योंकि वरदान ऐसे कार्य हैं जो परमेश्वर कलीसिया की सेवा के लिए हमारे द्वारा करता है। उन्हें "सबकी भलाई के लिए दिया गया है," अर्थात् कलीसिया की भलाई के लिए।

1 कुरिन्थियों 12:8-31 में पौलुस ने और अधिक विवरण के साथ आत्मिक वरदानों के उद्देश्य को स्पष्ट किया। उसने मानवीय देह के रूपक का परिचय दिया, और स्पष्ट किया कि देह का प्रत्येक भाग दूसरे भागों पर आधारित होता है और दूसरों से लाभ प्राप्त करता है। इसी प्रकार, कलीसिया के सदस्य एक देह हैं इसलिए हम एक दूसरे के वरदानों से लाभ प्राप्त करते हैं। पौलुस ने यह तर्क भी दिया कि आत्मा यह चुनाव करता है कि प्रत्येक व्यक्ति को कौनसा वरदान देना है। कलीसिया के प्रत्येक व्यक्ति के पास समान वरदान नहीं होते, जैसे कि मानवीय देह का प्रत्येक अंग एक सा नहीं होता। इसलिए किसी को ऐसा नहीं

सोचना चाहिए कि अधिक रोमांचकारी वरदानवाले श्रेष्ठ हैं, या जिनके पास ऐसे वरदान नहीं हैं वे तुच्छ हैं। सब वरदान कलीसिया की उन्नति के साधन के रूप में दिए गए थे। वास्तव में पद 26 में पौलुस ने कहा कि कलीसियाई देह के भाग एक दूसरे पर इतने आश्रित हैं कि जब "एक अंग दु:ख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दु:ख पाते हैं; और यदि एक अंग की बड़ाई होती है, तो उसके साथ सब अंग आनन्द मनाते हैं।"

फिर 13:1-13 में उसने सिखाया कि यदि वरदानों का प्रयोग एक दूसरे के प्रति प्रेम में नहीं किया जाता, तो व्यर्थ हैं। वे कलीसिया की उन्नति के अपने उद्देश्य को पूरा नहीं करते, और वे निश्चित रूप से उनका प्रयोग करनेवाले को भी लाभ नहीं पहुँचाते।

> जैसे कि हम जानते हैं और जैसे प्रेरित पौलुस कुरिन्थियों को लिखी अपनी पहली पत्री में दर्शाता है, आत्मिक वरदानों का समुचित प्रयोग यह है कि आत्मिक वरदान मसीह की देह, अर्थात् कलीसिया की उन्नति के लिए दिए गए हैं। और पौलुस स्वयं 1 कुरिन्थियों 13 में कहता है कि मैं तुम्हें सबसे उत्तम तरीका बताता हूँ, जो प्रेम है। और फिर वह समझाते हुए आगे बढ़ता है, प्रेम के बिना तुम कुछ नहीं कर सकते; सब वरदान व्यर्थ हो जाते हैं। अतः इसका अर्थ यह है कि प्रेम वह महत्वपूर्ण बात है जो सब आत्मिक वरदानों को एक साथ बाँधता है क्योंकि मसीह की देह आत्मिक वरदानों के द्वारा तब उन्नति करती है जब प्रेम उन्हें एक साथ बाँधता है।
>
> — प्रो. मुमो किसाऊ

अब, कई बार यह सोचा जाता है कि पौलुस ने कलीसिया की उन्नति करनेवाले वरदानों, जैसे कि भविष्यवाणी, और ऐसे वरदानों के बीच अंतर किया जिनका उद्देश्य व्यक्तिगत प्रयोग का है, जैसे अन्य-अन्य भाषाओं का वरदान जब उनका प्रयोग प्रार्थना की भाषा के रूप में किया जाता है। जैसा कि उसने 1 कुरिन्थियों 14:12 में कहा :

> ऐसा प्रयत्न करो कि तुम्हारे वरदानों की उन्नति से कलीसिया की उन्नति हो (1 कुरिन्थियों 14:12)।

आरंभ में, पौलुस के शब्द यह दर्शाते प्रतीत होते हैं कि कुछ वरदानों का उद्देश्य कलीसिया की उन्नति का नहीं है, और उन्हें केवल उस व्यक्ति की उन्नति के लिए दिया गया है जो उन्हें प्राप्त करता है। परंतु इस पद के विशाल संदर्भ में पौलुस का अर्थ यह था कि व्यक्तिगत उन्नति का अर्थ देनेवाले वरदानों का प्रयोग भी सार्वजनिक रूप से कलीसिया के लाभ के लिए किया जाना चाहिए।

उदाहरण के लिए, 1 कुरिन्थियों 14:22 में उसने कहा कि अन्य-अन्य भाषाओं का प्रयोग उचित रूप में कलीसिया में अविश्वासियों के चिह्न के रूप में किया जा सकता है। और पद 27, 28 में उसने जोड़ा कि यदि कोई किसी कलीसिया सभा में अन्य-अन्य भाषाओं में बात करता है तो उस भाषा का अनुवाद होना जरूरी है ताकि कलीसिया को उससे लाभ हो।

अब, अलग-अलग धर्मवैज्ञानिक परंपराएँ भविष्यवाणी और अन्य-अन्य भाषाओं को अलग-अलग रूप में समझती हैं, जैसा कि वे अन्य कई वरदानों के साथ भी करती हैं। परंतु हम इस बात पर सहमत हो सकते हैं कि सारे आत्मिक वरदानों का उद्देश्य कलीसिया की उन्नति करना है।

अब जबकि हमने आत्मिक वरदानों के उद्देश्य को परिभाषित कर लिया है, इसलिए आइए पवित्रशास्त्र में उनके इतिहास को संबोधित करें।

पवित्रशास्त्र में इतिहास

आत्मिक वरदान सबसे पहले पुराने नियम के दिनों में प्रकट हुए। उत्पत्ति 41 दर्शाता है कि आत्मा ने यूसुफ को स्वप्नों का अर्थ बताने में सहायता की। और दानिय्येल 4 दानिय्येल के बारे में भी यही कहता है। और निस्संदेह, पुराना नियम ऐसे बहुत से भविष्यवक्ताओं का उल्लेख करता है जिन्हें परमेश्वर ने अपने लोगों से बात करने के लिए नियुक्त किया और सामर्थ्य प्रदान की। हम पुराने नियम के चरित्रों के द्वारा चमत्कारों और चंगाइयों को प्रदान करने के उदाहरण भी देख सकते हैं, जैसे कि कोढ़ के रोग को चंगा करना और मृतकों को जिलाना। और यद्यपि पुराना नियम इन विषयों में हमेशा परमेश्वर के आत्मा का उल्लेख नहीं करता, फिर भी नया नियम यह स्पष्ट करता है कि ये आत्मिक वरदान थे। रोमियों 12:6; और 1 कुरिन्थियों 12:28, 29, प्रकट करते हैं कि भविष्यवाणी और चंगाइयाँ और आश्चर्यकर्म सब आत्मा के वरदान हैं।

इससे बढ़कर, निर्गमन की पुस्तक कई स्थानों पर उल्लेख करती है कि पवित्र आत्मा ने कारीगरों को असाधारण प्रतिभाएँ और योग्यताएँ प्रदान की ताकि वह उन्हें मिलापवाले तंबू को बनाने, और अन्य कारीगरों को सिखाने के योग्य बनें। वास्तव में, ये इतिहास के पहले लोग हैं जिनके बारे में बाइबल कहती है कि उन्हें आत्मिक वरदान प्रदान किए गए। निर्गमन 35:30-35 को पढ़ें जहाँ मूसा ने कहा :

> यहोवा ने यहूदा के गोत्रवाले बसलेल को... नाम लेकर बुलाया है; और उसने उसको परमेश्वर के आत्मा से ऐसा परिपूर्ण किया है कि सब प्रकार की बनावट के लिये उसको ऐसी बुद्धि, समझ, और ज्ञान मिला है... फिर यहोवा ने उसके मन में और... ओहोलीआब के मन में भी शिक्षा देने की शक्ति दी है। इन दोनों के हृदय को यहोवा ने ऐसी बुद्धि से परिपूर्ण किया है कि वे नक्काशी करने और गढ़ने वाले और... काढ़ने और बुनने वाले हों, वरन् सब प्रकार की बनावट में, और बुद्धि से काम निकालने में सब भाँति के काम करें। (निर्गमन 35:30-35)

पवित्र आत्मा ने राजाओं को भी ऐसी विशेष प्रतिभाओं से भरा जिन्होंने उन्हें अपने राज्यों पर शासन करने और उनका संचालन करने में योग्य बनाया। उदाहरण के लिए राजा शाऊल ने अपने कार्य को पूरा करने के लिए पवित्र आत्मा से शक्ति प्राप्त की। हम इसे 1 शमूएल 10:10, और 11:6 में देखते हैं। और 1 शमूएल 16:13, 14 में हम देखते हैं कि जब दाऊद को राजा के रूप में नियुक्त किया गया तो परमेश्वर ने शाऊल से वे आत्मिक वरदान ले लिए और दाऊद को प्रदान कर दिए। इसी कारण, दाऊद के बतशेबा के साथ पाप करने के बाद भजन 51:11 में उसने प्रार्थना की कि परमेश्वर पवित्र आत्मा को उससे दूर न करे। दाऊद जानता था कि दाऊद ने अपने वरदान शाऊल से हटा लिए थे क्योंकि शाऊल ने पाप किया था। और दाऊद को आशा थी कि अपने पश्चाताप के द्वारा परमेश्वर उससे वह वरदान नहीं छीनेगा जो उसने प्राप्त किए थे।

परंतु आत्मिक वरदानों के पुराने नियम के इन उदाहरणों के बावजूद यह स्वीकार करना महत्वपूर्ण है कि ये वरदान तुलनात्मक रूप से बहुत ही कम पाए जाते थे। वे उनके लिए सुरक्षित रखे गए जिन्हें परमेश्वर ने अपने बदले विशेष सेवा करने के लिए बुलाया था — जैसे कि भविष्यवक्ता और राजा। फिर भी, पुराने नियम ने भविष्य में एक ऐसे दिन की अपेक्षा की जब परमेश्वर के वाचाई समुदाय के सब लोग आत्मा के वरदान को प्राप्त करेंगे। योएल 2:28-29 में भविष्यवक्ता योएल ने यह लिखा :

> उन बातों के बाद, मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूँगा; तुम्हारे बेटे-बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे। तुम्हारे दास और दासियों पर भी मैं उन दिनों में अपना आत्मा उण्डेलूँगा (योएल 2:28-29)।

जब योएल ने कहा कि ये बातें “उन बातों के बाद” होंगी, तो उसका अर्थ था कि वे “अंत के दिनों” या “अंत के समयों” में होंगी। उस समय, जब परमेश्वर अपने स्वर्गीय राज्य को पृथ्वी पर लेकर आएगा तो उसके लोग बड़े पैमाने पर आत्मिक वरदानों को प्राप्त करेंगे।

आत्मा के वरदान केवल राजाओं और भविष्यवक्ताओं तक ही सीमित नहीं होंगे। इसकी अपेक्षा, परमेश्वर पूरे वाचाई समुदाय पर अपने आत्मा को उंडेलेगा। और तब ठीक यही हुआ जब यीशु ने अपनी पृथ्वी पर की सेवकाई के दौरान राज्य का उद्घाटन किया।

> पुराने और नए नियमों के समयों के बीच पवित्र आत्मा के वरदानों में अंतर करना एक बहुत ही कठिन प्रश्न है जो तब उठ खड़ा होता है जब पवित्र आत्मा की धर्मशिक्षा की बात आती है। मेरे विचार में बाइबल की शायद सबसे स्पष्ट शिक्षा यह है कि बाइबल पुराने नियम और नए नियम के पवित्र आत्मा के वरदानों के बीच की भिन्नता के विषय में ऐसे शब्दों में बात करती है जो परिमाण-संबंधी हैं। यद्यपि बाइबल हमें इसके बारे में बहुत अधिक नहीं बताती, परंतु यह कुछ जरूर बताती है; कम से एक दिशा-निर्धारण अवश्य प्रदान करती है। हम यशायाह 32:15 के बारे सोचते हैं जहाँ शब्द “आराह” का प्रयोग किया गया है, कि आत्मा को उंडेला जाएगा, जो नए नियम के दिनों के बारे में बात करता है... या एक अधिक प्रचलित अनुच्छेद जो कि निस्संदेह योएल 2:28 है, जहाँ ”शाफाक” क्रिया का प्रयोग करते हुए अंतिम दिनों में, मसीहा के दिनों में, पुनर्स्थापना और नवीनीकरण के दिनों में पवित्र आत्मा के उंडेले जाने के बारे में बात की गई है। इब्रानी में ये क्रियाएँ परिमाण-संबंधी हैं। इसका अर्थ है “बहुत अधिक परिमाण में उंडेलना।” और इसलिए, मेरे विचार में यदि हमें पवित्र आत्मा के पुराने नियम के कार्य और पवित्र आत्मा के नए नियम के कार्य के बीच अंतर करना है, तो हमें इसके और अधिक मात्रा में होने के आधार पर सोचना होगा, कि वहाँ पर पवित्र आत्मा का और अधिक कार्य है, और कि पवित्र आत्मा को और अधिक पैमाने पर भेजा गया है क्योंकि उसे बहुत ही बड़ी मात्रा में उंडेला गया है।
>
> — डॉ. रिर्चड, एल. प्रैट, जूनियर

प्रेरितों के काम 2 वर्णन करता है कि पिंतेकुस्त के दिन, अर्थात् यीशु के स्वर्गारोहण के कुछ ही दिनों के बाद पवित्र आत्मा संपूर्ण कलीसिया पर उंडेला गया। “आग की जीभें” उन पर उतरीं और परिणामस्वरूप वे सब लोग अन्य-अन्य भाषाओं में बात करने लगे। फिर प्रेरितों के काम 2:16-18 में प्रेरित पतरस ने स्पष्ट रूप से घोषणा की कि यह अंतिम दिनों के विषय में योएल की भविष्यवाणी की पूर्णता में हुआ।

उस दिन से आत्मिक वरदान कलीसिया के सब लोगों के लिए उपलब्ध रहे हैं। अब बाइबल वरदानों की एक व्यापक सूची प्रदान करने का प्रयास कभी नहीं करती है, और यह कभी नहीं कहती है कि वैध वरदान केवल वे ही हैं जो पहले ही प्रकट हो चुके हैं। इससे बढ़कर, रोमियों 12, 1 कुरिन्थियों 12, और इफिसियों 4 जैसे स्थानों में वरदानों की सूचियों के बीच भिन्नताएँ पाई जाती हैं। इसका अर्थ है कि ये सूचियाँ उन्हीं के उदाहरण प्रदान करती हैं जो पवित्र आत्मा ने किया है और उस समय कर रहा था। उनका उद्देश्य उसे सीमित करना नहीं था जो पवित्र आत्मा कर सकता है। यही नहीं, उल्लिखित बहुत से वरदान अपनी प्रकृति में सामान्य हैं, इसलिए उनके मूल प्रकटीकरणों को सटीकता के साथ निर्धारित करना असंभव है। फलस्वरूप, यह सोचना तर्कसंगत है कि पवित्र आत्मा के पास ईश्वरीय स्वतंत्रता है कि वह मनुष्यों में जिस योग्यता को चाहे उसे उत्पन्न करे या बढ़ाए।

चाहे हम यह सोचें कि पवित्र आत्मा कोई भी वरदान दे सकता है, या कि वह अपने वरदानों को उन्हीं वरदानों तक सीमित रखता है जिनका उल्लेख पवित्रशास्त्र में किया गया है, फिर भी हम सबको इस बात पर सहमत होना चाहिए कि वह अपने उद्देश्य और अपनी इच्छा के अनुसार वरदान देता है। वे उसके अनुग्रह के प्रकटीकरण हैं। वह उन्हें किसी एक विशेष तरीके में वितरित करने के लिए बाध्य नहीं है। पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 12:11 में इसका स्पष्ट वर्णन किया, जहाँ उसने यह लिखा :

> परन्तु ये सब प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा कराता है, और जिसे जो चाहता है वह बाँट देता है (1 कुरिन्थियों 12:11)।

और उसने यह लिखते हुए रोमियों 12:6 में भी कुछ ऐसा ही कहा :

> जबकि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न-भिन्न वरदान मिले हैं (रोमियों 12:6)।

अधिकतर धर्मविज्ञानी नए नियम की व्याख्या करते हुए यह सिखाते हैं कि पवित्र आत्मा प्रत्येक विश्वासी को कम से कम एक वरदान देने के प्रति प्रतिबद्ध है। इस विचार का समर्थन न केवल योएल 2:28, 29 के द्वारा किया जाता प्रतीत होता है, बल्कि रोमियों 12:6; इफिसियों 4:7; और 1 कुरिन्थियों 12:7, 11 के द्वारा भी। परंतु कई बार मसीहियों को यह बात चकित करती है कि यहाँ तक कि कलीसिया के अविश्वासी लोग भी आत्मिक वरदानों को प्राप्त कर सकते हैं। यह गिनती 22–24 में बिलाम नबी पर निश्चित रूप से लागू होता है। बिलाम ने परमेश्वर के लोगों को शाप देने का प्रयास किया परंतु परमेश्वर के द्वारा उसे बाध्य किया गया कि वह उन्हें आशीष दे। और यह नए नियम की कलीसिया पर भी लागू होता है। उदाहरण के लिए, मत्ती 7:21-23 में यीशु ने उन लोगों के सर्वनाश के बारे में बात की जिन्होंने उसके नाम से भविष्यवाणी की थी, दुष्टात्माओं को निकाला था, और बहुत से चमत्कार किए थे। और इब्रानियों 6:4-6 में इस चेतावनी को सुनें :

> क्योंकि जिन्होंने एक बार ज्योति पाई है, और जो स्वर्गीय वरदान का स्वाद चख चुके हैं और पवित्र आत्मा के भागी हो गए हैं, और परमेश्वर के उत्तम वचन का और आनेवाले युग की सामर्थ्य का स्वाद चख चुके हैं, यदि वे भटक जाएँ तो उन्हें मन फिराव के लिये फिर नया बनाना अनहोना है (इब्रानियों 6:4-6)।

यहाँ लेखक ने कहा कि जो भटक जाते हैं, हो सकता है वे पहले "स्वर्गीय वरदान का स्वाद चख चुके" हों, "पवित्र आत्मा के भागी" हुए हों, और "आनेवाले युग की सामर्थ्य का स्वाद चख चुके" हों। ये उल्लेख उद्धार के नहीं, बल्कि आत्मिक वरदानों का अनुभव करने के हैं।

प्राप्त करनेवाला चाहे एक विश्वासी हो, या फिर एक अविश्वासी, आत्मिक वरदानों का उद्देश्य समान है। उनका सबसे बड़ा उद्देश्य कलीसिया के लिए उपयोगी होना है। हमारे आत्मिक वरदानों का सर्वोत्तम प्रयोग अपने ही आत्मिक जीवनों को बढ़ाने का, या भावनात्मक रूप से स्वयं को उत्साहित करना, या कलीसिया में स्वयं को दूसरों से अलग दिखाने का नहीं है। इसके विपरीत, पवित्र आत्मा हमें इसलिए वरदान देता है ताकि हम दूसरों की सेवा कर सकें। और हमें यह जानते हुए दीनता के साथ उनकी सेवा करनी चाहिए कि हम जो कुछ भी कर पाते हैं उसका कारण वही है।

यहाँ तक हमने आत्मिक वरदानों की चर्चा पवित्रशास्त्र में उनके उद्देश्य और उनके इतिहास के आधार पर की गई थी। आइए अब हम उन तरीकों की ओर मुड़ें जिनकी ओर सुसमाचारिक लोगों ने अपने वर्तमान प्रयोग को निर्देशित किया है।

वर्तमान प्रयोग

जैसा कि हमने उल्लेख किया है, सब सुसमाचारिक लोग यह मानने की प्रवृत्ति रखते हैं कि पवित्र आत्मा आज भी आत्मिक वरदान देना जारी रखता है। वे इस बात पर भी सहमत होते प्रतीत होते हैं कि वह सब विश्वासियों को वरदान देता है। परंतु उनके उन वरदानों की प्रकृति के विषय में अलग-अलग दृष्टिकोण हैं जो वह वर्तमान में देता है — विशेषकर उन वरदानों के विषय में जो किसी न किसी रीति में प्रभावशाली होते हैं। यहाँ हमारे मन में वे वरदान हैं जो निश्चित रूप से आत्मा के कार्य हैं क्योंकि स्वाभाविक मानवीय योग्यताओं और प्रतिभाओं को प्रतिबिंबित नहीं करते। उदाहरण के लिए, सामर्थ्य के कार्य, चंगाई, मृतकों को जिलाना, स्वप्न, अन्य-अन्य भाषाओं में बोलना, भाषाओं का अनुवाद करना, भविष्यवाणी करना, और बुद्धि और ज्ञान के वचन, ये सब उन वरदानों के उदाहरण हैं जिनके विषय में सुसमाचारिक लोग तर्क देते हैं।

सामान्य रूप में, इन प्रभावशाली वरदानों के प्रति सुसमाचारिक दृष्टिकोण एक सांतत्यक पर इन वरदानों की संपूर्ण समाप्ति, और उनकी व्यापक निरंतरता के बीच में पाए जाते हैं। श्रेणी के समाप्तिवाले सिरे के विषय में सामान्यतः यह तर्क दिया जाता है कि प्रभावशाली वरदान इतिहास के एक पहले के युग से संबंधित थे, और वे उसी पहले युग के साथ समाप्त हो गए। कुछ उस पहले के युग को प्रेरितों के जीवनकाल से जोड़ते हैं। वे अक्सर इस प्रैरितिक युग को यीशु मसीह से संबंधित दावों के सत्य की गवाही देने, और कलीसिया की स्थापना करने के समय के रूप में देखते हैं। यह दृष्टिकोण आंशिक रूप से इफिसियों 2:20 का उल्लेख करता है, जो कहता है कि कलीसिया,

> प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर [बनाई गई है] (इफिसियों 2:20)।

मान्यता यहाँ यह है कि प्रभावशाली वरदान बुनियादी वरदान थे। वे केवल प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के समय से संबंधित थे जब नए नियम की कलीसिया स्थापित हो रही थी और इस्राएल से अलग एक अस्तित्व बना रही थी।

समाप्ति का तर्क देनेवालों की दृष्टि में ये वरदान केवल सुसमाचार और प्रैरितिक अधिकार को वैध ठहराने के उद्देश्य के लिए प्रकट किए गए थे। जब एक बार ये पर्याप्त रूप से वैध ठहरा दिए गए, तो आत्मा ने इन वरदानों को देना रोक दिया। कुछ इस अवधि को उस अंतिम प्रेरित, अर्थात् यूहन्ना की मृत्यु के साथ समाप्त करते हैं, जिसकी मृत्यु पहली सदी के अंत में हुई थी। कुछ अन्य इस बुनियादी अवधि को और आगे बढ़ाते हैं, अर्थात् चौथी सदी में पवित्रशास्त्र के कैनन के औपचारिक निर्धारण के समय।

> परमेश्वर आज भी अलौकिक आश्चर्यकर्म करता है। परंतु आज ये आश्चर्यकर्म और पवित्र आत्मा के कार्य उस श्रेणी के नहीं हैं जिस श्रेणी के वे प्रैरितिक युग में थे। प्रैरितिक युग के आत्मिक वरदानों का उद्देश्य कलीसिया की स्थापना करना था। उन्होंने प्रैरितिक शिक्षाओं की बुनियाद डाली और वे ऐसे माध्यम थे जिन्हें परमेश्वर ने स्वयं को मनुष्यों के समक्ष प्रकट करने के लिए इस्तेमाल किया। आज के आश्चर्यकर्म एक भिन्न, विशेष श्रेणी के हैं, और इसलिए नए प्रकाशन के माध्यम नहीं हैं। वे उसमें किसी नए प्रकाशन को नहीं जोड़ते जो परमेश्वर ने पहले से मसीह में पूरा कर लिया है और हमारे लिए जिसे बाइबल में लिखा है... इसलिए युगों से पवित्र आत्मा ने ऐसे अलौकिक वरदान दिए जिनके मसीही विश्वास को स्थापित करने के प्रकाशन-संबंधी उद्देश्य थे, और जब पवित्रशास्त्र में प्रकाशन को लेखनबद्ध कर दिया गया तो वे समाप्त हो गए।
>
> — रेव्ह. शेरिफ गेंडी, अनुवाद

श्रेणी के निरंतरता के सिरे के विषय में सामान्यतः यह तर्क दिया जाता है कि प्रभावशाली वरदान संपूर्ण मसीही कलीसिया से संबंधित हैं, और वे यीशु के पुनरागमन तक समाप्त नहीं होंगे। वरदानों की निरंतरता का मत रखनेवाले मानते हैं कि नए नियम के समय से ही सब विश्वासियों के पास सब प्रभावशाली वरदानों की पहुँच थी। कुछ लोगों का मानना है कि सामान्य मसीही अनुभव में कम से कम अन्य-अन्य भाषाओं का प्रभावशाली वरदान शामिल होना चाहिए। और कुछ तो इस बात पर भी बल देते हैं कि जो लोग अन्य-अन्य भाषाओं में बात नहीं करते उन्होंने शायद उद्धार भी नहीं पाया है। परंतु अन्य लोग केवल यह मानते हैं कि पवित्र आत्मा के पास अब भी आज़ादी है कि वह जहाँ और जब चाहे प्रभावशाली वरदान प्रदान कर सकता है। वे इस बात पर बल देते हैं कि वह केवल इसलिए इन वरदानों को रोके नहीं रहता क्योंकि प्रैरितिक युग समाप्त हो गया है। और वे दर्शाते हैं कि पवित्रशास्त्र का एकमात्र अनुच्छेद जो विशेष रूप से प्रभावशाली वरदानों की समाप्ति का उल्लेख करता है वह मसीह के पुनरागमन पर उस सिरे की समाप्ति का समय दर्शाता है। पहला कुरिन्थियों 13:8-10 में पौलुस ने यह लिखा :

> भविष्यद्वाणियाँ हों, तो समाप्त हो जाएँगी; भाषाएँ हों, तो जाती रहेंगी; ज्ञान हो, तो मिट जाएगा। क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है, और हमारी भविष्यद्वाणी अधूरी; परन्तु जब सर्वसिद्ध आएगा, तो अधूरा मिट जाएगा (1 कुरिन्थियों 13:8-10)।

निरंतरता का दृष्टिकोण यह तर्क देता है कि "सिद्धता" या तो स्वयं यीशु है, या उसके पुनरागमन के समय महिमा प्राप्त करने की हमारी अंतिम अवस्था। इनमें से चाहे जो भी हो, भविष्यवाणी, अन्य-अन्य भाषाएँ और ज्ञान तब तक जारी रहेंगे।

> यह कुछ समय से वाद-विवाद का विषय रहा है कि क्या पवित्र आत्मा के वरदान आज उपस्थित हैं या नहीं, और विशेषकर अधिक प्रभावशाली वरदान, जैसे कि अन्य-अन्य भाषाएँ, चंगाई, भविष्यवाणी, दुष्टात्माओं से छुटकारा... सवाल यह है कि ये आज भी विद्यमान हैं या नहीं। मैं उन सब लोगों को आमंत्रित करना चाहता हूँ जो यह सवाल उठाते हैं कि वे मुझे बाइबल में ऐसा प्रमाण दिखाएँ जो कहता हो कि वे वरदान आज उपस्थित नहीं हैं। मेरे कहने का अर्थ यह है कि वे वरदानों की बड़ी सूचियों के भाग हैं और इसलिए मेरे विचार से हम इस बात पर सहमत हैं कि प्रचार, संचालन और शिक्षण के वरदान आज भी उपस्थित हैं। और इसलिए, वे वरदान इनसे अलग क्यों हों? कई बार 1 कुरिन्थियों 13 को इस संबंध में उद्धृत किया जाता है, आप यह जानते हैं, और मैंने भी इस बात का प्रचार होते सुना है कि जब सर्वसिद्ध आएगा तो ये अन्य बातें, भविष्यवाणी और बाकी सब बातें भी जाती रहेंगी। और दावा यह किया जाता है कि वह सर्वसिद्ध परमेश्वर का सिद्ध वचन है... परंतु वास्तविक सिद्धता जो आने वाली है वह इस युग का अंत और नया आकाश और नई पृथ्वी है, और उसमें हमारा जीवन है। और इसलिए यह मानने का पर्याप्त आधार है कि ये वरदान आज भी निरंतर जारी हैं।
>
> — डॉ. जेफ्री जे. नीहौस

निस्संदेह, सांतत्यक के दोनों सिरों के बीच में विविध दृष्टिकोण पाए जाते हैं जो समाप्ति और निरंतरता के तत्वों को मिला देते हैं। कुछ लोगों का मानना है कि प्रभावशाली वरदान निरंतर जारी रह सकते हैं, परंतु वे पूरे इतिहास में बहुत ही कम हैं। अन्य लोगों का मानना है कि प्रभावशाली वरदान निरंतर बने हुए हैं, परंतु वे परिवर्तित हो गए हैं इसलिए अब वे प्रभावशाली नहीं हैं। उदाहरण के लिए, वे कह

सकते हैं कि भविष्यवाणी अब प्रचार और शिक्षण तक सीमित है, और उसमें अब परमेश्वर से विशेष प्रकाशन को प्राप्त करना शामिल नहीं है।

परंतु प्रभावशाली वरदानों के विषय में हम चाहे जो भी दृष्टिकोण रखें, फिर भी हमें उन मान्यताओं की श्रेणी को याद रखना चाहिए जिनका पालन बाइबल की पुष्टि करनेवाले, सुसमाचारिक मसीहियों द्वारा किया जाता है। आत्मा ने हमें कलीसिया की उन्नति करने के वरदान दिए हैं। अतः हमें वरदानों के प्रति हमारे दृष्टिकोण को एक दूसरे की आलोचना करने का कारण नहीं बनने देना चाहिए।

उपसंहार

कलीसिया में पवित्र आत्मा के नियति विधान के कार्य पर आधारित इस अध्याय में हमने तीन विषयों की खोज की है। हमने पुराने और नए नियम में आत्मा के वाचाई अनुग्रह पर ध्यान दिया है। हमने पवित्रशास्त्र की प्रेरणा, संदेश और उद्देश्य के आधार पर उसके द्वारा पवित्रशास्त्र के दिए जाने पर विचार-विमर्श किया है। और हमने उनके उद्देश्य, पवित्रशास्त्र में इतिहास, और वर्तमान प्रयोग पर ध्यान देने के द्वारा आत्मिक वरदानों को संबोधित किया है।

जैसा कि हमने इस अध्याय में देखा है, पवित्र आत्मा के नियति विधान के कुछ महानतम कार्य मसीह की कलीसिया के लिए किए गए हैं। हम उन तरीकों के विषय में सोचने के आदि हैं जिनमें वह विश्वासियों को आशीष देता है, और हम अपने अगले अध्याय में उन आशीषों पर ध्यान देंगे। परंतु यह जानना महत्वपूर्ण है कि वह अपने वाचाई समुदाय को अद्भुत अनुग्रह भी प्रदान करता है। पवित्र आत्मा के लिए पृथ्वी पर उसका कार्य पापियों को उनके पाप के परिणामों से बचाने से भी बहुत बड़ा है। यह परमेश्वर के लोगों की उन्नति करने और उन्हें सक्षम बनाने के विषय में है, ताकि हम पूरे संसार में उसके राज्य को बढ़ा सकें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.